दिमाग़ी ग़ुलाम और इस्लाम

सूफी काशान ग़यासी

मरकज़े तसव्वुफ
ख़ानकाह शरीफ़ क़ादरिया-शुत्तारिया-चिश्तीया-ग़यासिया
ज़ाकिर नगर, नई दिल्ली-110025

दिमाग़ी ग़ुलाम और इस्लाम

सूफी काशान ग़यासी

मरकज़े तसव्वुफ
ख़ानकाह शरीफ़ क़ादरिया-शुत्तारिया-चिश्तीया-ग़यासिया
ज़ाकिर नगर, नई दिल्ली-110025

सूफ़ी क़ाशान गयासी

Mobile - 9911590331

दिल से शुक्रिया इस किताब की शुरुआत

अल्लाह के नाम से शुरू,
जो बहुत मेहरबान और रहमत करने वाला है।

सारी तारीफ़ उसी अल्लाह (परमात्मा या ईश्वर) के लिए है, जो असली पहचान (मारफ़त) के लायक है और पूरी दुनिया का पालने वाला है।

यह किताब (**दिमागी ग़ुलाम और इस्लाम**) पीरो-मुर्शिद सरकार सूफी ग़यासुद्दीन शाह Q.S.A. साहब को नजराना है। उन्होंने इस किताब के ट्रांसलेशन (तर्जुमे) की एक मुहिम शुरू की, जो **'मरकज़-ए-तसव्वुफ़'** से जुड़ी है। यह सिर्फ़ एक संस्था नहीं, बल्कि एक सोच है, जो सरकार सूफी ग़यासुद्दीन शाह साहब ने दी। इसका मकसद उन लोगों तक सच्चाई पहुंचाना है, जो सच की तलाश में हैं और एक ही परमात्मा, एक ही ईश्वर की असली पहचान पाना चाहते हैं।

यह ग़ुलाम **डा० ऐडिड सफर साहब** का बहुत शुक्रगुजार है, जिन्होंने इस किताब को अंग्रेज़ी में **"Mental Bondage"** के नाम से लिखा। उन्होंने बहुत रिसर्च करके इसे तैयार किया ताकि लोगों तक असली इस्लाम पहुंचाया जा सके और यह समझाया जा सके कि आज के वक़्त में इस्लाम से इतनी नफ़रत क्यों है? इसकी क्या वजह है? कैसे इस्लाम, जो अमन (शांति) का पैग़ाम था, उसे बदलकर नफ़रत वाला मज़हब बना दिया गया?

कई सालों से इस ग़ुलाम के दिल में यह सवाल था कि जो

इस्लाम आज हम देख रहे हैं, क्या यही इस्लाम है जिसका पैग़ाम पैगंबर मोहम्मद सल्ल० ने दिया था? या फिर वक्त के साथ इसमें बदलाव आ गया है? इसी सवाल का जवाब देने के लिए मेरे पीरो-मुर्शिद ने यह किताब इस ग़ुलाम को दी और कहाः "मेरे बच्चे, इसको ट्रांसलेट करना।"

यह किताब का पहला हिस्सा है। किताब बड़ी होने की वजह से इसे अलग-अलग हिस्सों में ट्रांसलेट (तर्जुमा) करने का इरादा किया गया है।

यह किताब आपके दिमाग को रस्मी और बदले हुए इस्लाम से आज़ाद करेगी। लेकिन यह सिर्फ़ उन लोगों के लिए है, जो सच जानना चाहते हैं और असली इस्लाम को समझना चाहते हैं।

अल्लाह से दुआ है कि वह इस कोशिश को कबूल करे, हमें सच्चाई की राह दिखाए और अपनी असली पहचान तक पहुंचने की तौफीक़ दे। आमीन।

Mental Bondage किताब PDF नीचे दिए गए लिंक से डाउनलोड कर सकते हैं या फिर किताब में दिए गए नंबरों पर कॉल करके मंगवा सकते हैं।

अल्लाह सबसे बड़ा मदद करने वाला है।

नोटः इस किताब का मकसद पैसे कमाना नहीं, बल्कि लोगों को जागरूक करना है।

https%@@www-academia-edu@44779603
@Aidid&Safar&MENTAL&BONDAGE

शुक्रिया,

सूफी कशान अहमद ग़यासी

•••

तआरुफ़ (परिचय)

तर्क और विश्वास के बीच हमेशा टकराव रहता है और तर्क हमेशा इंसान के .खयालों को ग़िज़ा देने का काम करता है!

यह किताब इस्लाम के गहरे नज़रिये के बारे में है और इसका मक़सद मुसलमानों की नाकामयाबी को समझना है और क्यों मुसलमानों और बाकी धर्मों के बीच गहरी दुश्मनी हो गई है?

इस ग़ुलाम को एहसास हुआ और इस ग़ुलाम ने क़ुरआन से साबित करने की कोशिश की है कि किस तरह से बदले हुए क़ुरआन के मायनों की वजह से मुसलमानों से नफ़रत ग़लत नहीं है! आपको यह बात हैरान कर देगी कि जो लोग मुसलमान होने का दावा करते हैं दरअसल वो अरब के बनाए हुए मज़हब को मानते हैं! इसलिए वो अपने आपको ज़लील और दुखी महसूस करते हैं और जब तक करते रहेंगे, जब तक वो एक .ख़ुदा को जान नहीं लेते!

यह किताब इस्लाम की एक सच्ची तस्वीर पेश करेगी और बदले हुए इस्लाम से पर्दा उठाएगी जिससे आपको सच्चे और झूठे इस्लाम का पता चलेगा!

आप ज़रा ग़ौर करके देखिए और सोचिए कि जो इस्लाम हम देखते हैं, क्या यह वही इस्लाम है जिसका पैग़ाम सरकार-ए-दुआलम ने दिया था या कुछ और है! यह ग़ुलाम उम्मीद करता है कि यह किताब आपको क़ुरआन के मुताबिक़ यह बताएगी और समझाएगी कि हक़ीक़त में इस्लाम क्या है और क्या नहीं है!

जब हम क़ुरआन में ग़ौर-ओ-फ़िक्र करते हैं तो देखते हैं कि कैसे क़ुरआन का मर्म बदलकर अरब कल्चर को पेश किया जाता है! जिन्होंने क़ुरआन पर ज़ुल्म किया है, दरअसल उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल पर ज़ुल्म किया है! कैसे दीन (यानी ज़िंदगी जीने का तरीक़ा) को बदलकर रस्मी तक़लीदी मज़हब बनाकर पूरी दुनिया के सामने पेश किया है ज़ाहिरी मौलवियों ने!

इस ग़ुलाम ने जब क़ुरआन में ग़ौर-ओ-फ़िक्र किया तो महसूस हुआ कि मैंने मुसल्लम ईमान होने का फ़र्ज़ पूरा किया! मेरे भाई, .ख़ुदा का सबसे बड़ा फ़र्ज़ क़ुरआन में ग़ौर-ओ-फ़िक्र करना और .ख़ुदा को एक जानना है!

जब इस ग़ुलाम ने क़ुरआन में ग़ौर-ओ-फ़िक्र करना शुरू किया तो ज़ेहन में कुछ बुनियादी सवाल आए, वो ये हैं:

क्या जो काबा इंसानों ने अरब में बनाया, वो .ख़ुदा का घर है?

क्या अल्लाह को रहने के लिए घर चाहिए? अगर नहीं, तो फिर इंसान के बनाए हुए काबे को क्यों अल्लाह का घर कहा जाता है?

और अगर ऐसा नहीं तो क्यों पूरी दुनिया के मुसलमान किसी मिट्टी और पत्थर से बने हुए काबे के आगे झुकते हैं, उसे सजदा करते हैं और उसके चक्कर लगाते हैं (तवाफ़ करते हैं)? क्यों उस काले पत्थर को, जिसे हजरे असवद कहा जाता है, चूमते हैं?

क्यों हम इंसान के बनाए हुए काबे की तरफ़ रुख़ करके पांच वक्त की सलात (नमाज़) पढ़ते हैं?

इन सवालों ने इस ग़ुलाम को परेशान कर दिया और ग़ौर-ओ-फ़िक्र करने पर मजबूर कर दिया। फिर इस ग़ुलाम ने सभी सवालों के जवाब अल्लाह की किताब यानी क़ुरआन में ढूंढना शुरू कर दिया। तो मालूम हुआ कि क़ुरआन में सिर्फ़ नबियों के किस्से-कहानियाँ ही नहीं हैं, बल्कि और भी बहुत कुछ है!

क़ुरआन में सभी नबियों की ज़िंदगी का ज़िक्र है जो सरकार-ए-दो-आलम मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पहले हुए। आप ये बात तो मानते हैं कि जिनका क़ुरआन में ज़िक्र है, वो सभी नबी थे!

अगर हाँ, तो फिर एक के बाद दूसरे नबी के पैग़ाम की ज़रूरत क्यों पड़ी? मेरे भाई, पैग़ाम तो एक ही था! ज़रूरत इसलिए पड़ी क्योंकि उन सभी नबियों की उम्मतों ने उनके पैग़ाम को बदलकर न जाने क्या कर दिया था!

ऐसा ही मिलता-जुलता काम सरकार-ए-दुआलम की उम्मत ने किया—क़ुरआन के मायने बदलकर! जैसे क़ुरआन की आयत, जो सूरह बक़रा में 125 नंबर पर है, उसने इस ग़ुलाम को बहुत परेशान किया, जिसके मायने ये हैं:

“और जब हमने बनाया उस घर (काबे) को असल की तरफ़ लौटने का ठिकाना—लौटकर आने की जगह लोगों के लिए और अमन (शांत और सुरक्षित जगह) और तुम सब बनाओ मक़ाम-ए-इब्राहीम को नमाज़ पढ़ने की जगह। और हमने हुक्म दिया और एक अहद (वादा या क़रार) किया इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) और इस्माईल (अलैहिस्सलाम) से कि वो दोनों पाक रखें मेरे घर को तवाफ़ करने वालों के लिए, एतेकाफ़ करने वालों के लिए और रुकू-सजदा करने वालों के लिए!”

जितने भी तरजुमे ज़ाहिरी मोलवी साहब ने किए हैं, उन सभी में इंसानों के बनाए घर को अल्लाह का घर कहा गया है और उसे पूजनीय बना दिया गया?

हक़ीक़त आप जब जान पाएंगे जब आप क़ुरआन में ग़ौर-ओ-फ़िक्र करेंगे और अल्लाह के कलाम को समझने की कोशिश करेंगे!

क़ुरआन को समझने के लिए क़ुरआन में लिखे हुए लफ़्ज़ों और कलाम पर ग़ौर कीजिए और संजीदगी से अपने सवालों के

जवाब ढूंढिए। यक़ीनन, क़ुरआन में ही आपके सभी सवालों के जवाब हैं! अल्लाह ही आपको आपका जवाब देगा।

ये हैं क़ुरआन की कुछ आयतें जो आपकी मदद करेंगीः

- अल्लाह ने इंसान को कलाम सिखाये! (2:37)
- इब्राहीम (अ०) को अल्लाह के कलाम से आज़माया गया। (2:124)
- अल्लाह ने अपने कलाम के ज़रिए मूसा (अ०) को पैग़ाम दिया। (7:144)
- मूसा (अ०) की क़ौम ने अल्लाह के कलाम के मायने बदल दिए। (5:13)
- ज़करिया (अ०) के बेटे याह्या (अ०) ने अल्लाह के कलाम की तस्दीक की। (3:39)
- मरयम (अ०) ने अल्लाह के कलाम और अल्लाह की किताब को संभालकर रखा। (66:12)
- ईसा (अ०) के मरयम के बेटे होने की गवाही अल्लाह ने अपने कलाम से दी। (4:171)
- मोहम्मद (स.अ.व.) से अल्लाह ने कहा कि उन्होंने उसके कलाम को जाना। (7:158)
- कोई इंसान अल्लाह के कलाम को बदल नहीं सकता। (6:115)
- अल्लाह ने हक़ को अपने कलाम के ज़रिए ज़ाहिर करना चाहा। (8:7, 10:82)
- अल्लाह किसी भी झूठ को मिटा सकता है और हक़ को अपने कलाम के ज़रिए बताता है। (42:24)
- अल्लाह ने कहा कि वह अपनी किताब की हिफ़ाज़त करेगा। (15:9)
- क़ुरआन, अल्लाह की तरफ़ से एक इशारा है। (29:51)

ख़ुद क़ुरआन को जानना और सीखना होगा!

हमें क़ुरआन की हिफ़ाज़त करने के लिए कहा गया है, लेकिन दरअसल, हमने क़ुरआन को सिर्फ़ चूमने और उसके एहतराम तक ही महदूद कर दिया!

इसमें कोई शक नहीं कि क़ुरआन, अल्लाह का कलाम है और उसका एहतराम हम पर वाजिब है, मगर उसमें ग़ौर-ओ-फ़िक्र न करना, उस पर एहतराम न करने से बड़ा ज़ुल्म है!

क़ुरआन के कुछ शब्द, जिन्हें बदलकर आपके सामने पेश किया गया है!

हमने इस ज़िंदगी में अल्लाह के लिए क्या किया है?

हमारा अल्लाह और उसकी किताब को न जानना, हमें मौलवी साहब का मोहताज बना देता है!

हमारा अल्लाह के कलाम में ग़ौर-ओ-फ़िक्र न करना, हमारी अल्लाह से नज़दीकी में मुश्किलात पैदा करता है!

पूरी दुनिया की गैर-इस्लामी कौमों ने .ज्यादातर क़ुरआन को इसलिए क़ुबूल नहीं किया, क्योंकि ज़ाहिरी मौलवी साहब ने क़ुरआन के हक़ीकत के मायने ही छुपा दिए हैं!

यह ग़ुलाम सिर्फ़ उन लोगों को .ख़ताक़ार मानता है जिन्होंने क़ुरआन के मायने बदल दिए! अल्लाह के कलाम को बदल दिया, और इसका खामियाज़ा यह हुआ कि पूरी दुनिया में सरकार-ए-दो-आलम के पैग़ाम को बुरी निगाह से देखा जाता है, अमन के पैग़ाम को दहशत का पैग़ाम समझा जाता है!

जब आप क़ुरआन को जानने की कोशिश करेंगे, तो आपको यह महसूस होगा कि बिना सोचे-समझे ज़ाहिरी मौलवी साहब ने अपनी समझ क़ुरआन पर लाद दी है! इस ग़ुलाम ने कई ज़ाहिरी मौलवी साहब की तर्जुमा (Translation) पढ़ी, लेकिन कहीं न कहीं

क़ुरआन के असली मायने छुपा दिए गए हैं!

हमारे साथ एक परेशानी यह है कि हम यह सोचते हैं कि हमने तो इतने दिनों से यही समझा है, यह कैसे ग़लत हो सकता है? जो हमें सिखा दिया जाता है, हम सिर्फ उसे ही हक़ीकत मानने लगते हैं और .खुद कुछ मेहनत नहीं करना चाहते!

यह हमारी ज़िम्मेदारी है कि हम .खुद से समझने की कोशिश करें और क़ुरआन के असली मायनों को जानने के लिए ग़ौर-ओ-फ़िक्र करें, न कि केवल दूसरों की समझ पर निर्भर रहें।

जब कोई ज़ाहिरी मौलवी साहब क़ुरआन का तरजुमा करते हैं, तो जो शब्द वह नहीं समझते, उनका मफ़हूम जाने बिना, अपनी समझ को अपनी तर्जुमा पर डाल देते हैं! तरजुमा करने वाले मौलवी साहब अपने फ़िरके को .ज्यादा अहमियत देते हैं और क़ुरआन के पैग़ाम को अपनी ज़ाती फायदे के लिए बदल देते हैं!

क़ुरआन का तरजुमा समझने के लिए पहले आपको क़ुरआन पढ़ना होगा और फिर लफ़्ज़-बा-लफ़्ज़ उसके मायने समझने होंगे! हमें क़ुरआन में रिसर्च करनी चाहिए और अल्लाह के हुक्म को पूरा करने की कोशिश करनी चाहिए, न कि केवल दूसरों के द्वारा बताए गए तर्जुमों पर निर्भर रहना चाहिए।

जैसा कि यह ग़ुलाम आपको बता चुका है, कि तरजुमा करने वाले के फ़िरके और उनकी क़ुरआन पर रिसर्च से क़ुरआन के तर्जुमे में बहुत फर्क पड़ता है! क़ुरआन के तर्जुमा करने वाले को यह नहीं मालूम कि वो अरबी संस्कृति को एक मज़हब समझकर क़ुरआन का तर्जुमा कर रहे हैं!

मुसलमान क़ुरआन का तर्जुमा किसी भी ज़ाहिरी मौलवी साहब का मान लेते हैं, क्योंकि वो .खुद अरबी नहीं जानते! क़ुरआन को अरबी में पढ़ने की वजह हम अल्लाह के कलाम को जान नहीं पाते, क्योंकि हम सिर्फ़ अरबी पढ़ना जानते हैं, उसके

मायने नहीं जानते!

क़ुरआन हमें अपनी ज़िंदगी को बेहतर तरीके से जीने का रास्ता दिखाता है और पूरी दुनिया को अमन का पैग़ाम देता है! अल्लाह ने हमें क़ुरआन में हुक्म दिया है कि हम एक-दूसरे के साथ अच्छा सुलूक करें!

जब कोई भी मालिम-ए-दीं क़ुरआन का तरजुमा करता है, तो वह सिर्फ़ आयतों का तर्जुमा करता है, अरबी से उर्दू में या किसी भी अन्य भाषा में! वह एक आयत का दूसरी आयत से मुताला (comparison) नहीं करता, सिर्फ़ अरबी शब्दों का तर्जुमा करता है, वो भी वह जो उन्हें समझ आता है!

जैसा कि आप जानते हैं, एक शब्द के कई मायने होते हैं! यही सबसे बड़ी वजह है कि वे क़ुरआन का ग़लत तर्जुमा करते हैं और क़ुरआन पर ज़ुल्म करते हैं!

यह ग़ुलाम आपको कुछ आयतों और अल्फाज़ों का हवाला देगा, जिससे आपको मालूम होगा कि कैसे क़ुरआन पर अपनी समझ ज़ाहिरी मौलवी साहब ने लादी है!

हक़ीक़त को जानने के लिए आपको अपने अंदर सवाल पैदा करना होगा। जो भी बात आपको समझ नहीं आती, उस पर सवाल करना शुरू करना होगा! जो लोग मज़हब की जंजीरो में जकड़े हुए और मालिम-ए-दीन साहब के जाल में क़ैद हैं, उनके लिए इस ग़ुलाम की बात को समझना बहुत मुश्किल होगा!

क़ुरआन की यह रिसर्च अरबी मज़हब के दो फ़िरकों शिया और सुन्नी दोनों को ही नापसंद होगी! यह रिसर्च सिर्फ उन्हीं लोगों को समझ में आएगी, जो सवाल करते हैं या जो लोग हक़ीक़त जानना चाहते हैं!

यह ग़ुलाम आपको हक़ीक़त आपकी ज़ुबान में बताने की कोशिश करेगा! इस ग़ुलाम का तरीका हर आयत और सूरह को

ग़ौर-ओ-फ़िक्र के साथ पढ़ने का है!

और जब आप क़ुरआन में ग़ौर-ओ-फ़िक्र करेंगे तो आपको मालूम होगा कि जो भी आपने अब तक सीखा या बचपन से आपको बताया गया, वो सब ही बे-बुनियाद है! आपको पता चलेगा कैसे और कब क़ुरआन के मायने बदल दिए गए हैं!

क़ुरआन का तरजुमा इस तरह से है कि एक जगह एक अरबी शब्द के मायने कुछ हैं और वही दूसरी जगह मालिम-ए- दीन साहब उस ही शब्द के मायने कुछ और लिख देते हैं! जब आप क़ुरआन में ग़ौर-ओ-फ़िक्र करना शुरू करेंगे तो आप इस ग़ुलाम की बात से इंकार नहीं कर सकते कि क़ुरआन के मायने बदल दिए गए हैं!

इस बात को जानकर हैरानी होती है कि ये क़ुरआन को बदलना उन्होंने जान-बूझकर किया या उन्हें भी कुछ नहीं पता था कि अल्लाह हमसे अपनी किताब के ज़रिए क्या कलाम करना चाहता है! .ज्यादातर लोग जो अरबी भाषा नहीं जानते, उन्हें मालूम ही नहीं है कि क़ुरआन को बदल दिया गया है!

क़ुरआन अरबी में पढ़ना काले अक्षरों को पढ़ने से .ज्यादा कुछ नहीं है! परेशानी तो ये है कि जो भी क़ुरआन में ग़ौर-ओ-फ़िक्र करते हैं और जानते हैं कि क़ुरआन के मायने बदल दिए गए, वो भी कुछ नहीं बोलते, बस उन्हें तो ये समझा दिया जाता है कि भाई, क़ुरआन में सवाल नहीं उठाना चाहिए!

क़ुरआन की एक आयत जिसने इस ग़ुलाम के अंदर सवाल पैदा किया, वह यह हैः

> "ऐ इंसानो, अपने .ख़ुदा को जानो, उसकी पहचान हासिल करो जिसने तुम्हें और तुमसे पहले लोगों को पैदा किया! उसने ही इस कायनात को तुम्हारे रहने के क़ाबिल बनाया, वही है जिसने ज़मीन और आसमान को पैदा किया! उसने

ही आसमान से तुम्हारे लिए बारिश की और ज़मीन से तुम्हारे खाने का इंतज़ाम किया! जब तुम उसे जान लोगे तो तुम समझ जाओगे, उसका कोई बुत नहीं है!” (2:21-22)

इस आयत से पता चलता है कि अल्लाह ने सारे इंसानों के लिए पैग़ाम दिया है, चाहे वो किसी भी धर्म से ताल्लुक रखते हों! और उसकी पहचान हासिल करें, जिसने उन्हें पैदा किया है, न कि कोई ज़ाहिरी या ख़याली बुत बनाकर उसकी पूजा करें! लेकिन मालिम-ए-दीन साहब मुसलमानों से जानें या अनजाने में एक खयाली बुत की पूजा करवाते हैं!

मुझे बहुत हैरानी हुई जब क़ुरआन की एक और आयत पर मैंने ग़ौर कियाः

“अगर तुम दुनिया की भीड़ के पीछे चले तो तुम अल्लाह की पहचान के रास्ते से बेखबर रहोगे, क्योंकि उस भीड़ को भी नहीं पता कि अल्लाह की पहचान का रास्ता कौन सा है, वो तो सिर्फ खयाली ख़ुदा को ही अल्लाह समझे हुए हैं!” (6:116)

अल्लाह ने तुमको वही दीन (यानि ज़िंदगी जीने का तरीका) बताया है, जो नूह अ.स. को बताया था। ये वही दीन (ज़िंदगी जीने का तरीका) है जो इब्राहीम अ.स., मूसा अ.स. और ईसा अ.स. पर नाज़िल हुई आसमानी किताबों में अल्लाह ने बताया है! और तुम्हें उसी एक रास्ते पर चलना है! जो ख़याली या ज़ाहिरी बुत की पूजा करते हैं, उन्हें अल्लाह के बताए हुए ज़िंदगी जीने के तरीके से परेशानी होगी! ख़ुदा एक है और वो अपनी पहचान उसी को हासिल करता है जो उसके बताए हुए रास्ते पर चलता है! (42:13)

पहली आयत में अल्लाह ने हमसे कहा कि तुम भीड़ के पीछे ना चलो, खुद ग़ौर-ओ-फिक्र करो! और दूसरी आयत में अल्लाह ने कहा है कि वो एक है और उसकी ही तुम्हें दीदार या पहचान

हासिल करनी चाहिए! अल्लाह के बताए हुए रास्ते पर चलना चाहिए, जो तुम्हें उसकी पहचान हासिल करा सके!

सिर्फ अल्लाह ही हमें उसकी पहचान का रास्ता दिखा सकता है! अल्लाह का पैग़ाम तुम तक पहुँचाने वाले पैगंबर के पैग़ाम को समझो! पैग़ाम तो एक ही है, फिर एक के बाद दूसरे पैगंबर की जरूरत क्यों? क्या इसलिए जरूरत पड़ी क्योंकि उनकी उम्मत या उनके मानने वालों ने ही उनका पैग़ाम ही बदल दिया! वे ज़ाहिरी या .खयाली बुत की पूजा करते आए हैं, उन्हें तो किसी भी पैग़ाम से कोई फर्क नहीं पड़ता, वे सिर्फ पैग़ाम को बदलना जानते हैं! ऐसा ही सरकार-ए-दोआलम के पैग़ाम के साथ हुआ!

जब नूह अ.स., इब्राहीम अ.स., मूसा अ.स., ईसा अ.स., मुहम्मद स.अ.व., और सभी नबियों का पैग़ाम उनकी अपनी उम्मतों ने बदल दिया! पैग़ाम को मज़हब में तब्दील कर दिया और फिर उन मज़हब के ठेकेदारों का ये दावा करना कि वो तुम्हें अल्लाह की पहचान का रास्ता दिखाएंगे! दरअसल, ये दावा उतना ही झूठ है जैसा कि मज़हब! शायद ये किताब आपको मज़हब के ठेकेदारों की हकीकत बता पाए!

तुम्हें अल्लाह की तरफ लौट कर जाना है, उसे जानो, और अपने वादे पर क़ायम रहो जो तुमने उसकी पहचान हासिल करने के लिए किया था! बुत परस्त न हो जाना, उनकी तरह जिन्होंने ज़िंदगी जीने के तरीके को एक मज़हब बना दिया और उस बनाए हुए मज़हब के साथ खुश हैं! (30:31-32)

उनके रास्ते पर चलो जो तुमसे कुछ नहीं मांगते और वो हकीकत के रास्ते पर हैं (36:21)

मज़हब एक झूठ है जो इंसान ने बनाया है! किसी भी मज़हब को मानने वाले लोग उस मज़हब की रस्में निभाकर ही खुश हैं! आज के इस दौर में आपको कई मज़हब दिखाई देंगे, मगर इंसान

को पैदा करने वाला क्रीएटर (बनाने वाला) एक है! ये सभी मज़हब की दुकाने एक कमाई का ज़रिया हैं! ये किताब इस मज़हबी नज़ाम के खिलाफ है!

अब कुछ मिसाले (उदाहरण) देखते हैंः

वो जो अरब मज़हब में महाराथ हासिल रखते हैं, वो आपको इस्लाम का एक फ़र्ज़ क्या बताते हैं? ज़रा देखिए कि अरब में जाकर इंसानों के बनाए हुए काबे के चारों तरफ़ चक्कर लगाना और वहीं उस चार दीवारी के एक कोने में रखे काले पत्थर को चूमना है! एक और जगह जाकर एक पत्थर के खंभे पर पत्थर फेंकना और ये मानकर फेंकना कि तुम शैतान पर पत्थर फेंक रहे हो! हरम की मस्जिद में जो पानी सप्लाई किया जाता है, वो उस पानी को ज़म-जम कहते हैं और ये बताते हैं कि ये पानी अल्लाह की तरफ से है, हलाँकि वो खुद इस पानी को नहीं पीते, बल्कि मिनरल वाटर (साफ़ किया हुआ) पीते हैं?

एक और मज़हब है जिसे हम ईसाईयत (क्रिश्चियनिटी) कहते हैं, उनका ये मानना है कि उनकी धार्मिक किताब बाइबिल में सबसे ज्यादा अहमियत ईसा अ.स. को ख़ुदा का बेटा मानने पर दी गई है! और उनके मज़हब का मूल सूत्र ही ये है कि ईसा अ.स. ख़ुदा के बेटे हैं! वो ये भी कहते हैं कि यहूदी मज़हब की इबादत गाह के एक पादरी ने ख़ुदा के बेटे को फांसी पर चढ़ाने का हुक्म दिया था!

ईसा अ.स. की कौम जो ईसा अ.स. पर नाज़िल हुई आसमानी किताब को मानती है, वो ये इल्ज़ाम लगाते हैं कि ईसा अ.स. को किसी और ने फांसी पर चढ़ाया! बल्कि उन्हीं की उम्मत ने उनपर ये इल्जाम लगाया कि ईसा अ.स. ख़ुदा की ज़ात पर सवाल खड़े कर रहे हैं और उनका बहिष्कार किया, कहा कि तुम काफ़िर हो, ख़ुदा को न मानने वाले हो! आज वही लोग जिन्होंने उन्हें फांसी

पर चढ़ाया था, उन्हीं की उम्मतों ने उनका रहनुमा बनने का दावा किया है! ईसा अ.स. के नाम का मज़हब बनाकर, उस मज़हब के ठेकेदार बने हुए हैं!

और ये मज़हबी ठेकेदार तुम्हारे ही पैसे से अपनी समझ को पैगंबर का मज़हब बनाकर बेच रहे हैं! कई तरीकों से तुम उन्हें पैसे देते रहे हो, चाहे वो ज़कात के नाम पर हो या हज के नाम पर! और क़ुरआन कह रहा है कि तुम उनके साथ न हो जाना जो तुमसे कुछ मांगते हैं!

क़ुरआन तो बार-बार याद दिलाता है कि तुम ग़ौर-ओ-फिक्र करो, मगर तुम्हें तो सिर्फ ये सिखा दिया गया है कि क़ुरआन पर सवाल नहीं किया करते! तुम कुछ मेहनत ही नहीं करना चाहते, सोचते ही नहीं क़ुरआन में ग़ौर-ओ-फिक्र करने के लिए!

अल्लाह ने बहुत से इंसानों और जिन्नात के लिए जहन्नम मुकर्रर कर दी है, वो जिनके पास दिल है मगर समझते नहीं, आँखें हैं मगर देखते नहीं, कान हैं मगर सुनते नहीं! वो लोग जानवरों की तरह हैं, बल्कि जानवरों से भी बदत्तर हैं, लेकिन वो ये बात नहीं जानते! (7:179)

इस ग़ुलाम ने क़ुरआन पर ग़ौर-ओ-फिक्र किया है और क़ुरआन की कुछ खास आयतें आपके सामने पेश करूँगा! और अगर अभी ग़ौर-ओ-फिक्र न किया होता तो कोई और करता कुछ वक्त बाद! क्योंकि हक़ीक़त हमेशा छुपी नहीं रहती!

इस किताब की बातें कुछ नई लगेंगी और आप सोचेंगे कि ये क्या है, और कुछ ज़ाहिरी मुसलमानों को तो बहुत बुरी लगेंगी! लेकिन ये किताब आपको अल्लाह के पैग़ाम के बारे में बताएगी, जो अल्लाह का “दीन” (यानि ज़िंदगी जीने का तरीका) है! क़ुरआन किसी भी एक धर्म के लिए नहीं है, ना ही कोई मज़हब अल्लाह ने क़ुरआन में बताया है! ज़ाहिरी मुसलमान और मज़हबी ठेकेदार

क़ुरआन को जानते ही नहीं, बल्कि क़ुरआन को मानने का दावा करते रहते हैं!

इस किताब को पढ़ने वाले शायद साफ बात सुनने और पढ़ने के आदी न हों, और कुछ दिमाग़ी बंद लोग इस बात को समझ न पाएं! ये किताब सिर्फ उन लोगों के लिए है जो जानना चाहते हैं कि कैसे क़ुरआन की आयतों के मायने बदल दिए गए! इस दुनिया में जितने भी सच्चे और ईमानदार मुसलमान हैं, वो जानना चाहते हैं कि सरकारे-दोआलम का असली पैग़ाम कौन सा था! आपसे गुज़ारिश है कि इस किताब की बातों के खिलाफ एकदम से न हों और ना ही बिना ग़ौर-ओ-फिक्र किए कोई भी इस किताब की बात माने या अमल करें!

इस ग़ुलाम की इस किताब का मकसद किसी को तकलीफ़ देना नहीं है, बल्कि आपको जागरूक करना और हक़ीकत से रुबरू कराना है! आपका दिमाग़ कुंद किया जा रहा है अरब मज़हब के ज़रिए! दुनिया में जितनी भी जगहे अरब मज़हब को मानने वाले हैं, उनके दिमाग़ों को कुंद कर दिया गया है! अरब मज़हब इतना अंदर घुस चुका है कि आप सरकारे-दोआलम के पैग़ाम को भूल ही नहीं गए, बल्कि जो आपको हक़ीकत बताने की कोशिश करता है, उस पर आपके मज़हबी रहनुमा फ़तवा लगाते हैं! और कई देशों में तो मज़हब में ग़ौर-ओ-फिक्र करना और अपने अंदर सवाल पैदा करना कानूनन जुर्म है! हालाँकि वो फ़तवा देने वाले या कानूनन जुर्म कहने वाले अल्लाह और क़ुरआन पर ज़ुल्म कर रहे हैं, ग़ौर-ओ-फिक्र न करके!

पैगंबर का पैग़ाम सबसे ज्यादा अहम है, अब सवाल ये है कि वो कौन सा पैग़ाम है जो सरकार-ए-दो-आलम ने दिया? क्योंकि हम जो अपने आसपास देखते हैं, वो तो अरब का बनाया हुआ मज़हब है, कोई पैग़ाम नहीं! वो मज़हब तो रस्मों, तकलीफ़ों और

रिवाजों से भरा है! हमें सरकार-ए-दो-आलम के पैग़ाम का पता क़ुरआन में ग़ौर-ओ-फ़िक्र करके ही मालूम हो सकता है! आइए आगे देखते हैं और समझने की कोशिश करते है!

●●●

पहला हिस्सा

ग़लत फ़हमियां

आज के दौर में इस्लाम शब्द को ग़लत और बुरा समझा जाने लगा है! इस्लाम शब्द के मायने हैं अमन और वो अमन ख़ुदा के उस हुक्म को पूरा करके लाया जा सकता है जो दीन (ज़िंदगी जीने का तरीका) है! जिस ख़ुदा ने हमें पैदा किया, उसने पैगंबर भेजे ताकि लोग उनकी बात मानें और उस ख़ुदा का हुक्म पूरा करें! जब हम इस्लाम शब्द सुनते हैं, तो हमारे ज़ेहन में कभी कोई ऐसी तस्वीर नहीं होती कि ये हुक्म ख़ुदा की तरफ से है! इस्लाम शब्द के मायने हैं ऐसी ज़िंदगी जो ख़ुदा के बताए हुए रास्ते पर चलकर जी जा सके, बिना किसी रस्म, रिवाज या दुनियावी मज़हब को मानें!

मज़हबी ठेकेदारों ने इसे तबाह और बरबाद कर दिया, न जाने इस्लाम के नाम पर क्या बताते हैं ये तुम्हें! इस बात में कोई शक नहीं कि ये मज़हबी पैग़ाम जो आप अपने आस-पास देखते हैं, ये ख़ुदा का पैग़ाम नहीं है! अरब मज़हब ने शुरू से ही लोगों को गुमराह किया है, जिसका .ख़ामियाजा ये हुआ कि कौम मानसिक और एतिहासिक तौर पर बहुत पीछे चली गई, उनके दिमाग कुंद हो गए! मज़हबी ठेकेदारों ने ख़ुदा के पैग़ाम, ज़िंदगी जीने के

तरीके को ही बदल दिया, हालात ये कि इस्लाम को एक ख्याली बुतपरस्ती मज़हब बना दिया जिसमें जानवरों को काटना, उनका मांस खाना, इंसानों के बनाए हुए ख़ुदा के घर का तवाफ़ करना, ज़ेहन को कुंद कर देना है! और ये सब इसलिए है कि वो दावा करते हैं कि ये अल्लाह का पैग़ाम है, इसमें कहीं कोई अमन जैसा अमल तो दिखता नहीं! ये सोचिए कि सिर्फ अमन या शांति कह देने से वो आ जाता है या ख़ुदा के बताए रास्ते पर चलकर आएगा!

इस किताब के जरिए हम समझेंगे कि अरब मज़हब में ख्याली बुतों की पूजा की जाती है! ये ग़ुलाम आपको हकीकत से रुबरु करेगा कि कैसे सरकार-ए-दोआलम का पैग़ाम बदलकर और उनके नाम से मज़हब बना दिया गया! बात ये नहीं है कि ये सरकार-ए-दोआलम के पैग़ाम के साथ हुआ, बल्कि सभी नबियों की उम्मतों ने पहले तो उन पर जुल्म किया और उनकी बात से इनकार करते रहे, बाद में उन्हीं पैगंबरों के नाम से मज़हब बना दिया!

ये बात जरा गौर करके देखिए, क्या आपको ख़ुदा की पहचान के लिए, उसके बताए रास्ते पर चलने के लिए किसी मज़हब की जरूरत है? जिन्होंने भी मज़हब की ईजाद की, उन्होंने अपने ख़ुदा और उसके पैगंबर पर जुल्म किया! अमन के पैग़ाम को बदलकर बुतपरस्ती वाला मज़हब बना दिया!

ये ग़ुलाम आपको कुछ और बातें बताना चाहता है:

क़ुरआन जो अल्लाह का कलाम है, हमने उसे सिर्फ दोहराने वाली किताब बना दिया!

क़ुरआन ख़ुदा का पैग़ाम और अइना-ए-हक है!

क़ुरआन में ग़ौर-ओ-फिक्र करके आपको मालूम होगा कि कैसे ख़ुदा के पैग़ाम को आज के समय में मरोड़ कर पेश किया गया है!

एक बात और, इस ग़ुलाम ने ख़्याली बुतपरस्ती इसलिए कही है क्योंकि अल्लाह सब गुनाह माफ़ कर देगा, मगर बुतपरस्ती नहीं, चाहे आप जानबूझकर करें या अंजाने में किसी .ख़्याली ख़ुदा को पूजा करें!

आप कुछ भी कर लें, चाहे जितनी रस्में रिवाज, अदा कर लें मगर बुतपरस्ती माफ़ नहीं होगी!

> ख़ुदा ने तुम्हें और तुमसे पहले लोगों को यह हुक्म दिया कि तुम बुतपरस्त न हो जाना, तुम्हारे सारे अच्छे काम बेकार हो जाएंगे बुतपरस्ती करके! पहचान हासिल करो उस ख़ुदा की जो एक है और उसके शुक्रगुजार रहो! (39:65-66)

> अल्लाह तुम्हारे बाकी गुनाह माफ़ कर देगा मगर बुतपरस्ती कभी माफ़ नहीं करेगा! जिस किसी ने भी अल्लाह की पहचान के सिवा किसी भी तरह की बुतपरस्ती की, उसने क़ुरआन और अल्लाह पर ज़ुल्म किया! (4:48)

जैसा कि आप जानते हैं, मूसा अ.स. ने अपनी जवानी में एक क़तल किया था, लेकिन फिर भी ख़ुदा ने मूसा अ.स. को अपना नबी बनाया और उनका गुनाह माफ़ कर दिया! क्योंकि मूसा अ.स. ने ख़ुदा की पहचान हासिल की, उस रास्ते पर चले जिसका हुक्म ख़ुदा ने दिया था!

अल्लाह ने कैसे मूसा अ.स. से कलाम किया:

> “मैं तुम्हारा ख़ुदा हूं, अपनी नलैन निकाल दो, तुम एक पाक घाटी तुवा में हो! मैंने तुम्हें चुना है, सुनो उसे जो तुम पर नाज़िल हुआ है, मैं ही एक ख़ुदा हूं और मेरे सिवा कोई ख़ुदा नहीं, और ऐहद करो तुम मेरी ख़िदमत करोगे!”
> (20:11-14)

> “मूसा, ये मैं हूँ तुम्हारा ख़ुदा जो फैसला करने वाला भी है! अपना सामान और अपनी छड़ी छोड़ कर मेरी तरफ आ जाओ।” जब मूसा अ.स. ने ऐसा किया, तो वो अपने आप

को ऐसा चलते हुए देखकर घबराए, फिर ख़ुदा ने कहा, "मूसा घबराओ मत, तुम्हें डरने की ज़रूरत नहीं, तुम तो मेरे पैगंबर हो!" (27:9-10)

अब अपना हाथ जेब में डालो, ये अब सफेद हो जाएंगे बिना किसी रंग के और अपना भरोसा इकट्ठा करो इन दो निशानियों को लेकर जो तुम्हें तुम्हारे ख़ुदा ने दी हैं! जाओ, ये दो निशानियाँ फिरऔन और उसके मानने वालों के पास ले जाओ, जो नाइंसाफी करने वाले लोग हैं! (28:32)

जब ख़ुदा ने मूसा अ.स. से फिरऔन के दरबार में जाने का हुक्म दिया, तो मूसा अ.स. ने ख़ुदा से अर्ज़ किया, "या मेरे ख़ुदा, मैंने उन लोगों में से एक का क़तल किया, कहीं वो मुझसे उसका बदला ना ले!" (28:33)

फिर ख़ुदा ने कहा, "ऐ मूसा, जब कोई ग़लत काम करे और उसके बाद मेरी पहचान के रास्ते पर चले, तो मैं उसे माफ़ कर देता हूँ!" (27:11)

इंसान अपनी फितरत से मजबूर है! हम बहुत सी गलतियाँ करते हैं और अपनी निजी ज़िंदगी में ख़ुदा के बनाए कानून को तोड़ते हैं। दरअसल, ये करके हम अपने ख़ुदा पर ज़ुल्म करते हैं! हमारे इतने ज़ुल्म करने के बावजूद, क़ुरआन में ख़ुदा हमसे कह रहा है कि वह हमारे गुनाह माफ़ कर देता है, मगर सिर्फ हमें उसके बताए हुए रास्ते पर चलकर अपनी ज़िंदगी जीनी है! क्या ख़ुदा के हुक्म को पूरा करने के लिए हमें किसी मज़हब की ज़रूरत है?

वो जिन्होंने अल्लाह से तौबा कर ली और उसकी पहचान हासिल करके अच्छे काम किए, तो अल्लाह उनके गुनाह माफ़ कर देगा! इसमें कोई शक नहीं कि वह बड़ा रहम वाला और गुनाहों को माफ़ करने वाला है! जिन्होंने तौबा की और अच्छे काम किए, बेशक अल्लाह उनकी तौबा क़ुबूल करने वाला है! (25:70-71)

इस बात का भरोसा हमें अल्लाह के कलाम क़ुरआन से मिलता है कि उसकी पहचान हासिल करने और उसे एक जानने के लिए या कोई अच्छा काम करने के लिए हमें किसी भी मज़हब की ज़रूरत नहीं है!

क़ुरआन

सबसे पहली बात तो यह है कि क़ुरआन का तर्जुमा करना ही मुमकिन नहीं है क्योंकि क़ुरआन का किसी और भाषा में तर्जुमा नहीं किया जा सकता। क्योंकि आप शब्दों का तर्जुमा कर सकते हैं, लेकिन क़ुरआन का जो मर्म है, वह कैसे आप बता पाएंगे बिना अल्लाह की पहचान हासिल किए?

यह बात बिलकुल सही है कि मज़हब के ठेकेदारों ने पूरी दुनिया के लोगों को अल्लाह का कलाम उनकी ज़बान में न समझाने की एक साज़िश की है! अरब के मज़हबी ठेकेदारों ने मज़हब के ज़रिए हक़ीकत को ढक दिया!

यहां तक कि जो भी क़ुरआन की तशरीह करते हैं, उन्हीं को लोग अल्लाह का कलाम मानने लगते हैं! इसका असर यह हुआ कि अल्लाह के बताए हुए ज़िंदगी जीने के तरीके (दीन) को बदल कर अपना बनाया हुआ मज़हब बना दिया!

पूरी दुनिया के गैर-अरबी लोग पांच वक्त अरबी में ही नमाज़ पढ़ते हैं! दूसरे मुल्क के लोग जो अरबी नहीं जानते, जब वे अरब की बनाई हुई रस्में अदा करते हैं, तो उन्हें मालूम ही नहीं होता कि वे क्या पढ़ रहे हैं! उन्हें तो सिर्फ अरब के बनाए हुए .खुदा की पूजा करना बताया जाता है! इससे तो यह मालूम होता है कि .खुदा सिर्फ अरबी ही जानता है, और जो .खुदा सिर्फ एक भाषा जानता हो, वह .खुदा कैसे हो सकता है?

अरब के मज़हब को मानने वालों के साथ मज़हब के ठेकेदारों ने ये जानबूझकर अपनी भाषा का असर पूरी दुनिया पर डालने के लिए किया है! जैसे कि हम जानते हैं, पहले अरब मज़हब बनाया गया और उसे मुसलमान की तहज़ीब बता दी गई, यानी उसके मानने वाले लोग मुसलमान कहलाने लगे! और तो और, तुम क़ुरआन में ग़ौर-ओ-फ़िक्र ना कर सको इस लिए उन्होंने ये नियम बना रखे हैं कि कोई भी क़ुरआन का तर्जुमा बिना उनकी इजाज़त और उनकी निगरानी के कहीं भी मान्य नहीं होगा!

हालांकि यह सब उन्होंने सिर्फ और सिर्फ तुम्हें तुम्हारे ख़ुदा की पहचान हासिल न हो सके, इसके लिए किया है!

यह किताब अरब द्वारा फैलाए गए सभी बेबुनियाद बातों का इनकार करती है! हम लोग क़ुरआन का अध्ययन करेंगे तर्क और अच्छी अक़्ल के साथ, ताकि हर कोई चाहे वो अरब का हो या गैर-अरब, वो इस किताब में लिखी हुई बातों को समझ सके! मेरे भाई, इसमें कोई शक नहीं कि क़ुरआन अल्लाह का ही कलाम है!

अरब के बनाए हुए मज़हब के मानने वाले लोग अपनी अक़्ल का हक़ीकत को जानने के लिए बिलकुल भी इस्तेमाल नहीं करते! वो अपने मज़हब के ठेकेदारों से सवाल ही नहीं पूछते और अपने आप को मुसलमान कहते हैं! आज पूरी दुनिया में इस कौम से ज़्यादा बदतर हालत किसी कौम की नहीं है, आज ये कौम पूरी की पूरी कुंद हो चुकी है! अल्लाह की लानत है इन पर जिन्होंने अल्लाह के पैग़ाम 'दीन' (ज़िंदगी जीने का तरीका) को बदल दिया, उस ख़ुदा पर ज़ुल्म किया जिसने ये सातों आसमान और ज़मीन को पैदा किया! यह उसका रहम और करम है कि उसने अपना पैग़ाम इब्राहीम अ.स., इस्माईल अ.स., इसहाक़ अ.स., याक़ूब अ.स., मूसा अ.स., ईसा अ.स. और बाकी सभी नबियों पर उन्हीं की ज़ुबान में भेजा न कि किसी एक भाषा में! अब तक अल्लाह ने किसी एक भाषा को

अपनी भाषा नहीं बताया! दरअसल उसने अपना पैग़ाम चाहे किसी भी भाषा में इल्हाम के ज़रिए भेजा हो, मगर उसका मकसद सिर्फ और सिर्फ तुम्हारी ज़िंदगी में सुकून लाना है, जो उसके पहचान के ज़रिए मिलता है!

सिर्फ एक ख़ुदा की पहचान करनाः

जितने भी नबी हुए, उन पर नाज़िल हुआ पैग़ाम बहुत ही आसान और सीधा सा है! वो एक ही पैग़ाम जो सभी को मानना चाहिए और उस पर अमल करना चाहिए। मेरे भाई, वो तो .ख़ुदा का एक मास्टर प्लान है ताकि हम लोग अपनी ज़िंदगी बेहतर ढंग से जी सकें!

हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि यह शैतान का मकसद है कि हम अपने .ख़ुदा के रास्ते से भटक जाएं! .ख़ुदा ने बार-बार इंसानों को यह बताने की कोशिश की कि इंसान अपने बनाए हुए किसी भी तरह के बुत की पूजा न करें! भाई, हक़ीकत तो यह है कि .ख़ुदा का पैग़ाम यह है कि कोई भी इंसान अपने बनाए हुए मज़हब को न माने और न ही आधिकारिक इबादत करे! .ख़ुदा ने अपने पैगंबर को इबादत, यानी उसकी पहचान के लिए कहा है, न कि उसकी पूजा करने के लिए! .ख़ुदा ने तो इंसान को किसी भी मज़हबी सफर की इजाज़त नहीं दी और न ही अपने नाम पर किसी को पैसे देने की इजाज़त दी है!

आप यह बात जानकर हैरान होंगे कि पूरे क़ुरआन में .ख़ुदा ने कभी भी मज़हब बनाने की इजाज़त नहीं दी! ज़रा गौर कीजिए और सोचिए कि शैतान के लिए सबसे आसान क्या है? वह .ख़ुदा के निज़ाम को .ख़राब कर दे, बस यही है— उसके पैग़ाम को बदल दिया जाए और इंसान को उसकी पहचान से भटका दिया जाए!

कैसे रस्मों ने इस्लाम को बर्बाद कर दिया? क्या क़ुरआन में कहीं इन रस्मों का ज़िक्र है? आइए हम लोग जानने की कोशिश करते हैं कि अल्लाह ने हमें क़ुरआन के ज़रिए क्या हुक्म दिया है!

.ख़ुदा का हुक्म सभी पैग़म्बरों और उनकी उम्मतों के लिए यह था कि वो जो भी करें, अल्लाह के लिए करें, और हक़ीकत का दिल हाज़िर रखकर करें! इस्लाम, जिसके मायने हैं कि इंसान अपने किरदार से दुनिया में अमन कायम करे और .ख़ुदा का हुक्म पूरा करे! अब आप सोच रहे होंगे, तो यही तो सब कहते हैं, मेरे भाई, वो अमन तब आएगा जब आप .ख़ुदा की पहचान हासिल करने का इरादा करेंगे और उसके बताए हुए हक़ीकत के रास्ते पर चलेंगे!

> ऐ मेरे नबी, हमने जितने भी तुमसे पहले नबियों को पैग़ाम दिया, वो एक ही थाः एक .ख़ुदा को जानो, जो एक है, और उसके अलावा किसी भी बुत की पूजा न करो! (21:25)

जैसा कि इस .ग़ुलाम ने आपको बताया है कि अमन तो अल्लाह की पहचान हासिल करने से आएगा! जब हम चाहते हैं कि हम उसके बताए हुए ज़िंदगी जीने के तरीकों को अपनाएं तो हमें किस्से और कहानियां सुनाई जाती हैं, जैसे कि कोई कहता है कि .ख़ुदा ने एक बेटा पैदा किया और वो उस बेटे को ही .ख़ुदा से .ज़्यादा अहमियत देने लगते हैं!

एक बात और आपने सुनी होगी कि जब भी सरकार-ए-दोआलम का नाम आए तो तुम उन पर दुरूद भेजो! दरअसल, मज़हब के ठेकेदारों ने अपने मज़हब को बढ़ाने के लिए तुम्हें उलझाने का काम किया है, चाहे वो किसी भी मज़हब के ठेकेदार हों!

> उस .ख़ुदा को जानो, जिसने किसी एक बेटे को पैदा नहीं किया और न ही किसी के साथ उसकी हुकूमत में शरीक हुआ! और उसे किसी इंसान की ज़रूरत नहीं, जो उसकी हिफ़ाज़त करे! (17:111)

किसी भी मिशन को बर्बाद करने में उसके मानने वाले ही होते हैं, जैसे कि जब लोगों ने यह दावा किया कि ख़ुदा का कोई बेटा है, उसी वक्त से ही उन्होंने ख़ुदा के नाम को, उसकी पहचान को दबाना

शुरू कर दिया और जिसे ख़ुदा ने बेटा बनाया, उसकी पूजा शुरू कर दी!

क़ुरआन में तो ख़ुदा ने कहा है कि उसे किसी की हिफ़ाज़त की ज़रूरत नहीं और आपके आस-पास के मज़हबी ठेकेदार, जिन्हें हम मौलवी, पंडित या पादरी कहते हैं, वे यह दावा करते हैं कि वे ख़ुदा और उसके मज़हब की हिफ़ाज़त करने वाले हैं! मेरे भाई, ग़ौर कीजिए, क्या वे हिफ़ाज़त कर रहे हैं? क्या उसे हिफ़ाज़त की ज़रूरत है? वे तो अपने बनाए हुए मज़हब को बढ़ावा दे रहे हैं, नई-नई रस्में बनाकर! और उन रस्मों को मज़हबी क़ानूनों का नाम दे दिया और कहते हैं कि ख़ुदा को इसकी ज़रूरत है, जैसे कि हज करना, क़ुर्बानी करना और बिना ख़ुदा की पहचान हासिल किए सलात को क़ायम करना!

हर इंसान से ख़ुदा ने उम्मीद की है कि वह अपनी निजी ज़िंदगी जीते हुए उसकी पहचान हासिल करे! क़ुरआन में ख़ुदा ने कहीं भी किसी रस्मी इबादत को 2, 4 या 5 वक्त पढ़ने का हुक्म नहीं दिया! ख़ुदा ने क़ुरआन में किसी मस्जिद के बनाने का हुक्म नहीं दिया, न ही कोई मज़हबी मदरसा बनाने का हुक्म हुआ और न ही कोई मज़हबी क़ानून बनाने की इजाज़त दी है!

यह सब तो एक साज़िश है, मेरे भाई, अल्लाह और उसके आख़िरी नबी के ख़िलाफ़, उन लोगों की, जिन्होंने अरबी मज़हब बनाया है!

जैसे कि ये ग़ुलाम आपको बता चुका है कि कैसे ज़ाहिरी मौलवी साहब ने दीन (यानी ज़िंदगी जीने के तरीक़े) को बदलकर एक मज़हब में तब्दील कर दिया! एक और क़ुरआन का लफ्ज़ है 'या-बुदु' (मैं ख़िदमत करूंगा), जिसे बदलकर 'मैं पूजा करूंगा' कर दिया गया!

हमें तो सिर्फ़ ये क़ुरआन के दो लफ़्ज़ों को बदलना लगता है, मगर हक़ीक़त में इन लफ़्ज़ों के बदलने की वजह से इस्लाम का बुरा

हाल हो गया! ये बड़े अफ़सोस की बात है कि अरब मज़हब को मानने वालों ने और भी बहुत सी जगहों पर क़ुरआन के मायने बदले हैं!

आप तो जानते हैं कि ज़ाहिरी मौलवी साहब मक्का के काबे जाकर हज करने को एक अहम फ़र्ज़ बताते हैं! भाई, ये मत कहना कि लफ़्ज़ के नज़दीकी मायने लेने में क्या हर्ज़ है—ना भाई, पूरा का पूरा पैग़ाम और उसका मक़सद बदल जाता है!

ये ग़ुलाम आपको आगे और बताएगा कि कहां पर तर्जुमा करने वालों ने मायने बदले हैं और कहां पर अपनी समझ क़ुरआन पर लादी है!

क़ुरआन को समझने का सही तरीक़ा ये है कि उसे लफ्ज़-बा-लफ्ज़ उसके हक़ीक़ी मायनों के साथ समझा जाए!लेकिन लफ़्ज़-बा-लफ़्ज़ पढ़ने को मज़हबी ठेकेदार मना फ़रमाते हैं, इसलिए मना करते हैं—कहीं आप जाग न जाएं!"

> क्योंकर ये लोग क़ुरआन में ग़ौर-ओ-फ़िक्र नहीं करते? अगर ये क़लाम ख़ुदा की तरफ़ से न होता, तो लोग इसमें बहुत इख़्तिलाफ़ करते! (4:82)

आपका क़ुरआन को न समझना, उसके बदले हुए मायनों की वजह से हो सकता है, वरना ख़ुदा ने तो क़ुरआन में अपना पैग़ाम साफ़ फ़रमा दिया है! क्या तर्जुमा करने वाले एक लफ़्ज़ या आयत का वैसे ही तर्जुमा करते हैं जैसे उन्होंने क़ुरआन की किसी और जगह उसी लफ़्ज़ या आयत का किया है?

उन्हें ये सोचना चाहिए कि हम क़ुरआन के मूल लफ़्ज़ (root word) की तशरीह नहीं कर सकते, जैसे कि 'अमर' जिसके मायने ज़िंदगी के हैं! ये ग़ुलाम आपको कुछ और लफ़्ज़ बताएगा, जैसे कि 'उमुर' यानी उम्र, 'अमारा' जिसके मायने खेती करने के या नई ज़िंदगी लाने के हैं। क़ुरआन का एक और लफ़्ज़ है 'मामूर' जिसके

मायने ज़िंदा दिली के हैं!

लेकिन फिर क्यों 'उमरा' लफ़्ज़ के मायने बदलकर सफ़र कर दिए गए? ये मायने तो कहीं भी हक़ीक़ी मायनों से नहीं मिलते! ज़िंदगी की उम्र और सफ़र में शायद ज़ाहिरी मौलवी को कोई फ़र्क़ ही नहीं लगता, तभी तो कुछ के कुछ मायने कर दिए!

क्या आप ये बात जानते हैं कि अरबी लफ़्ज़ बनने का एक तरीक़ा है, जैसे वह लफ़्ज़ कहाँ से आया है, लफ्ज़ों की किस जमात से उसका ताल्लुक़ है, और उसका मूल शब्द क्या है! अगर आपको अल्फ़ाज़ के सही मायने जानने हैं, तो आपको उसके मूल शब्द के मायने तलाशने होंगे!

हाँ, मगर मूल शब्द के मायने तलाश करते वक्त यह ध्यान रखना चाहिए कि उसके आगे या पीछे कोई और हुरूफ़ न लगा दें! यह आम बात है कि एक मूल शब्द से कई शब्द बने होते हैं।

जैसे कि हम तीन मूल शब्दों (का, ता, बा) को देखते हैं और कोशिश करते हैं समझने की कि हम उन्हें कैसे उनके सार और उनके मूल शब्द से अल्फ़ाज़ के मायने समझ सकते हैं!

किताब	=	यानी किताब या एक सफ़ीहा
क़ातिब	=	लिखने वाला या मुसन्निफ़
'उक्तुब	=	लिखना
मक्तूब	=	लिखा हुआ
कुतिबा	=	तसदीक करने वाला (निर्धारित)
क़तबा	=	उसने लिखा
क़ताबु	=	उन्होंने लिखा
क़ताबत	=	उस औरत ने लिखा
क़तबना	=	हमने लिखा
यक़तुबु	=	वो लिखता है

यक़तबुना	=	वो लिखते हैं
तक्तुबु	=	तुम लिखो
नक़तुबु	=	हम लिखते हैं
मकतब	=	स्कूल

आपके लिए ये बहुत ज़रूरी बात है कि जब आप किसी भी मूल शब्द को समझ लेते हैं, तो उससे बने बाकी अल्फ़ाज़ को समझने में आपको आसानी होगी! अरबी ज़बान में बहुत सारे मूल शब्द हैं और हर किसी के सही मायने भी हैं!

बहुत मुश्किल से ये पता लगाया जा सके कि तर्जुमे में बदलाव कब और किसने किया! क्योंकि क़ुरआन की पहली अंग्रेजी तर्जुमा लगभग 150 साल पुरानी है! मेरे भाई, 7वीं सदी में तो अरब के हुक्मरानों ने अरबी अल्फाज़ की लुगत लिखवाना शुरू की थी ताकि अरब मज़हब को और.ज्यादा बढ़ावा मिले! और अलग-अलग समझ रखने वाले और अलग-अलग फिरकों से ताल्लुक रखने वालों से वो लुगत लिखवाई गई! इसके बाद अरब मज़हब के ठेकेदारों ने उस लुगत का मुताला किया और अपने हिसाब से किया और एक लुगत तैयार कर दी! अब आप सोचिए ज़रा कि जो जिस फिरके से ताल्लुक रखता है उसकी समझ तो उसके फिरके के हिसाब से ही चलेगी और उसकी लिखी हुई लुगत कैसी होगी! इससे भी मज़हब के ठेकेदारों का मन नहीं भरा, फिर उसके बाद उस लुगत में बदलाव किया गया कि इसमें कुछ गलतियां हैं! हर कोई कहता है कि हम सही हैं, हमारे फिरके का तर्जुमा सही है! इस .ग़ुलाम ने आपको क़ुरआन की एक आयत का पहले हवाला दिया था कि “अगर क़ुरआन .ख़ुदा का क़लम न होता तो लोग इसमें बहुत इख़्तिलाफ़ करते”! (4:82)

अब सोचो ज़रा तुम क्या कर रहे हो, या तुम्हारे मज़हबी रहनुमा

क्या कर रहे हैं क़ुरआन के साथ कभी सवाल भी कर लिया करो भाई?

यह बात तो आप जानते ही होंगे कि सरकार-ए-दौआलम से पहले अरब के लोगों की कौम कई ख़ुदाओं को मानती थी! अरब के लोग अपने बुत बना रहे थे और वो अपनी रेमे बनाकर उन बुतों की पूजा करते थे! वो अपने बुतों को जानवरों की क़ुर्बानी दिया करते थे और अनाज का अपने बुतों पर चढ़ाया करते थे! इस बात पर हैरान मत हो भाई, ये हक़ीकत है और सुनो, जहाँ पर आज इंसानों के हाथों से बना काबा है, वो उस जगह को पाक जगह कहते हैं क्योंकि वहाँ वो अपने बुतों की पूजा करते थे! और जब ख़ुदा ने अपना पैग़ाम सरकार-ए-दौआलम के ज़रिए अरब में नाज़िल किया, तो उन्हीं बुतपरस्तों की औलादों ने सोचा कि यह किसी मज़हब का पैग़ाम है और क़ुरआन को रटने और दोहराने की किताब समझा! यह ग़ुलाम आपको पहले ही बता चुका है कि इसमें कोई शक नहीं कि क़ुरआन अल्लाह का क़लम है मगर किसी मज़हब के लिए नहीं है, मेरे भाई! क़ुरआन को तुम्हें वो रास्ता दिखाता है जो ख़ुदा को पसंद है! क़ुरआन तो हमें अच्छे और बुरे की तमीज़ सिखाता है और जो कौमें हमसे पहले हुईं, उनके अखलाक़ और उनकी मान्यताओं के बारे में बताता है! क़ुरआन से हमें क़ुदरत के क़ानून का भी मालूम होता है!

जब ख़ुदा ने क़ुरआन को सरकार-ए-दौआलम पर नाज़िल किया तो वह यह बात जानता था कि अरब के लोग इंकार करने वालों में से हैं और वह लोग क़ुरआन की हक़ीकत से महरूम हैं! यह किताब आपको क़ुरआन के हवाले से आप तक हक़ीकत पहुँचने का काम करेगी!

यह अरब के लोग इंकार करने वाले और मुनाफिक हैं जिन्हें अभी क़ुरआन की हक़ीकत नहीं मालूम जो ख़ुदा ने अपने पैगंबर पर

नाज़िल किया है! बेशक ख़ुदा सब कुछ जानने वाला और इंसाफ़ करने वाला है! (9:97)

यह बड़ी अफसोस की बात है कि पूरी दुनिया के मुसलमान जो अरब के नहीं हैं, वे अरब के लोगों की और उनके रहनुमाओं का ऐहतराम सिर्फ इस वजह से करते हैं क्योंकि क़ुरआन अरबी में नाज़िल हुआ! लेकिन अगर आप क़ुरआन में ग़ौर-ओ-फिक्र करेंगे तो आपको मालूम होगा कि अरब के मज़हब में कहीं भी ख़ुदा का पैग़ाम नहीं है! दुनिया भर के मुसलमान अरब के कल्चर और वहां के रिवाजों को इतना मानते हैं कि वे अरब मज़हब के ठेकेदारों पर आंखें और दिमाग बंद करके उन पर भरोसा करते हैं!

ख़ुदा का ताल्लुक़ सिर्फ अरब से नहीं है।

जो पूरी कायनात का मालिक है, उसकी इबादत सिर्फ अरबी ज़बान में ही नहीं की जा सकती। जब आप ऐसा सोचते हैं, तो आप ये भूल जाते हैं कि ख़ुदा पूरी कायनात का मालिक है, सिर्फ अरब का नहीं। आप जिस भाषा को जानते हैं, वो सभी भाषाओं को जानने वाला है। वो जो पूरी कायनात का मालिक है, उसे आपके अल्फाज़ की ज़रूरत नहीं है, वो तो बिना अल्फाज़ के भी आपके दिलों के हाल से वाकिफ है।

क्या आप को ये एक साजिश नहीं लगती के अरबी भाषा और अरब के कलचर पर कितना ज़्यादा जोर दिया जाता है! क़ुरआन से हमें इस बात का सबूत मिलता है कि इब्राहीम अ.स., इस्माईल अ.स., इसहाक अ.स., याकूब अ.स., दाऊद अ.स., सुलेमान अ.स., मूसा अ.स. और ईसा अ.स., ये सभी ख़ुदा के पैगंबर थे! अब यह बात ग़ौर करने वाली है कि इनमें से कोई भी अरबी नहीं बोलता था, मगर ख़ुदा की पहचान सभी नबियों को हासिल थी! वो ख़ुदा की पहचान हासिल करने की कोशिश सिर्फ़ कुछ पढ़कर या बोलकर नहीं करते थे, बल्कि बिना कोई अल्फ़ाज़ ज़बान से बोले उसकी

पहचान हासिल करने की कोशिश करते थे! सभी पैगंबरों का रिश्ता ख़ुदा के साथ बहुत मज़बूत और पाक था क्योंकि सभी ने ख़ुदा से किए वादे को पूरा किया, यानी उसकी पहचान हासिल करने के वादे को! अब आप ये सोचिए कि ये सब बिना अरबी भाषा के उनको मिला तो फिर अरबी ज़बान क़ीमती कैसे हुई? दरअसल ख़ुदा ने सभी पैगंबरों को बुतपरस्ती रोकने के लिए भेजा था, मगर बुतपरस्ती हर दौर के साथ बदलती रही! सभी की कौमों ने ख़ुदा के पैग़ाम (ज़िन्दगी जीने के तरीके) को ही बदल दिया और वो अपने ख़ुदा से किए वादे को भूल गए!

.ख़ुदा की सभी मख़लूक, चाहे वो ज़मीन में हो या आसमान में, वो सब सिर्फ़ .ख़ुदा की ख़िदमत में हाज़िर हैं और उसी की पनाह में हैं! ऐसा कोई नहीं जो उसकी ख़िदमत न करता हो और .ख़ुदा उन सभी की ख़िदमत और उनकी ज़बान से वाक़िफ है! इस बात की दलील क़ुरआन में हज़रत सुलैमान अ.स. के क़िस्से से मिलती है! .ख़ुदा ने सुलैमान अ.स. को यह नेमत अता की थी कि वो ज़मीन के जानवरों और आसमान के परिंदों की भाषा जानते थे और उनसे बात किया करते थे! एक दिन जब हज़रत सुलैमान अ.स. चीटियों के रास्ते से गुज़र रहे थे तो वो चीटियों की बातें सुनकर मुस्कुराने लगे!

जब वो चीटियों के रास्ते पर थे तो उनमें से एक चीटी ने बाक़ी सभी चीटियों से मुख़ातिब होकर कहा, “ऐ चीटियों, जाओ, अपने-अपने घरों के अंदर, कहीं अनजाने में सुलैमान की फ़ौज तुम्हें कुचल न दे।” (27:18)

ज़ाहिरी सी बात है भाई कि चीटियाँ आपस में अरबी में तो बात नहीं कर रही होंगी! .ख़ुदा ने उनकी ज़बान को अरबी भाषा में बताया, क्योंकि .ख़ुदा सभी ज़बानें जानता है! अगर यह आयत किसी फ्रेंच या हिंदी नबी पर नाज़िल होती, तो उन चीटियों की

भाषा फ्रेंच या हिंदी होती!

.ख़ुदा ने मूसा अ.स. पर जो किताब तौरात नाज़िल की, वो उन्हीं की ज़ुबान में नाज़िल हुई, और अरब में पैदा हुए सरकार-ए-दोआलम पर क़ुरआन उन्हीं की ज़ुबान अरबी में नाज़िल हुआ!

मेरे भाई, आपसे .ख़ुदा ने यह नहीं कहा कि तुम अरब कल्चर और वहाँ के रीति-रिवाजों को मानो! वो तो तुमसे सिर्फ़ अपना वादा पूरा कराना चाहता है, जिसका तुमने उससे अहद किया था!

.ख़ुदा ने मूसा अ.स. पर जो किताब तौरात नाज़िल की, वो उन्हीं की ज़ुबान में नाज़िल हुई, और अरब में पैदा हुए सरकार-ए-दो-आलम पर क़ुरआन उन्हीं की ज़ुबान अरबी में नाज़िल हुआ!

मेरे भाई, आपसे .ख़ुदा ने यह नहीं कहा कि तुम अरब कल्चर और वहाँ के रीति-रिवाजों को मानो! वो तो तुमसे सिर्फ़ अपना वादा पूरा कराना चाहता है, जिसका तुमने उससे अहद किया था!

“ऐ इसराईल के लोगो! शुक्रिया अदा करो उन नेमतों का जो हमने तुम्हें अता कीं और अपना अहद पूरा करो जो तुमने मुझसे किया था, और मैं अपना अहद पूरा करूँगा जो मैंने तुमसे किया है! पहचान हासिल करो मेरी और अमल करो उस पैग़ाम पर जो तुम्हारे लिए भेजा है, और तस्दीक़ करो उसकी जो तुमसे पहले लोगों के लिए भेजा था!

> मेरे पैग़ाम को तुम कारोबार मत बना लेना! सच को झूठ के साथ न मिलाओ, सच को छुपाने की कोशिश मत करो और बेशक, ये तुम बिल्कुल अच्छी तरह जानते हो! अपने वादे पर क़ायम रहो और कोशिश करो अपना वादा पूरा करने की, और उनके साथ मुलायमियत से पेश आओ जो तुम्हारे साथ मुलायमियत से पेश आते हैं! (2:40-41-43)

.ख़ुदा ने अपना पैग़ाम कई भाषाओं में नाज़िल किया और इसमें कोई शक नहीं कि .ख़ुदा का पैग़ाम उसके पैग़म्बर और उसकी भाषा

से.ज्यादा अहमियत रखता है! वो लोग जो .ख़ुदा के पैग़ाम को नहीं मानते, वो पैग़ाम की भाषा को.ज्यादा अहमियत देते हैं!

क़ुरआन से हमें ये मालूम होता है कि .ख़ुदा की किताब की भाषा से.ज्यादा ज़रूरी उसका पैग़ाम है, और वो पैग़ाम उनके दिलों में महफ़ूज़ है जिन्हें उसकी पहचान हासिल हो गई है!

क़ुरआन में एक अच्छी मिसाल है उन लोगों की, जिन्होंने तौरात की भाषा को.ज्यादा अहमियत देने के बजाय सिर्फ़ तौरात के पैग़ाम को समझा! वही मिसाल उन लोगों की भी है जिन्होंने ये दावा किया कि वो मूसा (अ.स.) के पैग़ाम को मानते हैं, हाला कि हक़ीक़त में वो नहीं मानते और उन्होंने तौरात की भाषा को लेकर फ़साद पैदा किया और बाद में तौरात को ही छोड़ दिया!

और वही एक छोटे से यहूदी सूफ़ियों के गिरोह ने बेबीलोनियन और फ़लस्तीनी तलमूद लिखी! तलमूद, जिसे ये कहा जाता है कि तौरात को समझने के लिए सबसे बेहतर किताब है! लेकिन यहूदी कहते हैं कि तलमूद को पढ़ना नहीं चाहिए बल्कि गाने की तरह उसे याद करना चाहिए और गाना चाहिए!

कहा जाता है कि तलमूद को समझने के लिए तौसेफ़ता (किताब) को समझना चाहिए, जो मिशनाह (किताब) के बारे में बताती है! मिशनाह किताब एक यहूदी जानकार ने लिखी थी, लेकिन मिशनाह को समझने के लिए हमें शमाई और हिलेल की लिखी हुई किताबों को समझना होगा!

जैसे कि ये .ग़ुलाम आपको बता चुका है, यहूदी जो अपने आपको हज़रत मूसा (अ.स.) की क़ौम बताते हैं, दरअस्ल वो खुद मूसा (अ.स.) की शख़्सियत से नावाक़िफ़ हैं, और उन्हीं लोगों ने मूसा (अ.स.) के नाम से एक उलझा देने वाला मज़हब बना दिया है!

यहूदी मज़हब के लोगों ने तौरात को अपनी-अपनी समझ से बदल कर अलग-अलग फ़िरक़े बना लिए हैं! और ऐसा ही अरब

मज़हब के मानने वाले लोगों ने किया, जैसे यहूदियों ने अपने मज़हब के साथ किया था!

क़ुरआन में .ख़ुदा पहले ही फ़रमा चुका हैः

> "बहुत से लोग उसके पैग़ाम से इनकार करेंगे, चाहे वो किसी भी ज़बान में नाज़िल हुआ हो!"

और अगर हम क़ुरआन को अरब के लोगों की ज़ुबान अरबी में ना नाज़िल करते तो वो लोग कहते कि हमें .ख़ुदा का पैग़ाम समझ नहीं आया, न मालूम किस ज़ुबान में है! क्या हमें किसी और ज़ुबान में क़ुरआन को अरब के लोगों के लिए नाज़िल करना था?

कह दो उनसे, जो जानना चाहते हैं, कि क़ुरआन ही उन्हें मेरी पहचान का रास्ता दिखाएगा! और जो ग़ाफ़िल हैं और जानने की कोशिश नहीं करते, दरअसल वो अंधे और बहरे हैं!

> और जब हमने मूसा (अ.स.) पर तौरात नाज़िल की, तो लोगों ने उसमें भी फ़साद पैदा किया!"(41:44-45)

> अगर ग़ैर-अरबों को .ख़ुदा का पैग़ाम अरबी ज़ुबान में सुनाया जाता, तो वो उसे क़बूल ना करते! और जो .ख़ुदा के क़लाम पर अमल नहीं करते और इनकार करते हैं, वो तब तक नहीं मानते जब तक उन्हें तकलीफ़ न दी जाए!
>
> (सूरह अश-शुआरा 26:198-201)

हालाँकि क़ुरआन के अरबी में नाज़िल होने के बावजूद .ख़ुदा ने अरबों को नापसंद किया है बाक़ी क़ौमों के मुक़ाबले में!

इसकी दलील आपको क़ुरआन से मिलती है कि अल्लाह ने अरब के लोगों को क्या-क्या नसीहतें दीं और क्यों?

कुछ लोग कहेंगे, 'भाई, लगता है आप अरब के लोगों से नफ़रत करते हैं, इसलिए उनके ख़िलाफ़ लिखा है इस किताब में!'

नहीं, मेरे भाई, ऐसा नहीं है! ये ग़ुलाम कोई अपनी तरफ़ से थोड़ी कह रहा है! ये तो क़ुरआन की आयतों से साबित है कि वहाँ

के लोग कैसे थे उस वक़्त, जब क़ुरआन नाज़िल हुआ!

अगर हम क़ुरआन के हवाले से देखें, तो 'अ'रबु' और 'अ'राबी' के माने अरब के रेगिस्तान के और वहाँ के रहने वाले गँवार लोगों के हैं! और कई हवाले ये ग़ुलाम आपको बताएगा!

"ये अरब के लोग भटके हुए हैं और .खुदा के पैग़ाम का इनकार करने वालों में से हैं! ये तो .खुदा की हदों को तोड़ने वालों में से हैं!

.खुदा ने अपने पैग़म्बर को इनके हालात वही नाज़िल करके बताए! बेशक वो सब कुछ जानने वाला है!

(9:97) - लेख मर्माड्यूक पिकथॉल, ब्रिटेन के इस्लामी जानकार)

ये अरब के गँवार लोग .खुदा के पैग़म्बर पर नाज़िल हुए .खुदा के पैग़ाम को ना मानने वाले और उसका सख़्ती से इनकार करने वाले हैं!

बेशक .खुदा सब कुछ जानने वाला और बड़ा हाकिम है!

(9:97) - लेख मोहम्मद असद प्रेस लेखक

ये अरब के गँवार लोग उन रियाकारों में से हैं, जो न मानने वालों में भी सबसे बेकार हैं! ये .खुदा के हुक्म और उसके पैग़ाम से अभी ग़ाफ़िल हैं, जो उसने अपने पैग़म्बर पर नाज़िल किया! बेशक .खुदा सब कुछ जानने वाला है! (9:97) लेख यूसुफ़ अली)

.खुदा की अरबी क़ुरआन में बिल्कुल सही और साफ़ तौर पर लिखी हुई है! क़ुरआन की ज़बान में गँवार और रेगिस्तानी अरब के बारे में .खुदा ने इस तरह फ़रमाया हैः

"बदू'ना फिल-आ'रबी" (बदू-नु अरब के रेगिस्तानी लोग)।

जब क़ुरआन में गँवार अरबों से बात की जाती है, तो हमें ये आयत मिलती हैः

- "याहसबूनल अह-जाबा लाम-यज़-हबू, वा-इन-यक़्तिल-अह-ज़ाबु युवड-ऊ लाऊ अन-न्हुम बादु-ना फिल-आ'रबी यास-

अलूनआ अन-अबा'इकुम वालाऊ-कानू फिकुम मा-क़ोर-तालू इल्ला-आक़ो-रिलान" (33:20)

- "ल-क़द-का-ना लाकुम फ़ी-रूसुल-लिल-लाही अस्वातुन हसना-तुन ली-मन-काना यरजुल-लाहू वल-यौमिल-आखिर-राल-लाह हाकशिर-रन" (33:21)
- उन्होंने सोचा कि उनका साथ देने वाले अब नहीं आएंगे, लेकिन जब उनका साथ देने वाले आए, तो उनकी तमन्ना थी कि वो अरब के गँवार लोग हों, जो दूर खड़े रहकर देखते हैं! अगर ऐसा होता कि वो तुम्हारे साथ होते, तो उन्हें जिहाद करने की ज़रूरत न होती! (33:20)
- इसमें कोई शक नहीं कि तुम्हारा पैग़ाम ही तुम्हारे लिए बेहतरीन मिसाल है, जिन्होंने .ख़ुदा की पहचान हासिल की और उनकी जान को समझा! (33:21)
- (9:97-101) में साफ़ तौर पर अरब शब्द का इस्तेमाल किया गया है, मगर यहाँ पर यह शब्द इस्म' यानी दवनद' की परिभाषा पर खरा नहीं उतरता! यह इस बात को साबित करता है कि अरब शब्द से शहरों के लोगों को कहा गया है!
- (9:101) "तुम्हारे आस-पास के अरब मुनाफ़िक़ हैं, और यहाँ के रहने वाले .ज़्यादा मुनाफ़िक़ होते हैं!

एक बात और, वो ये कि क़ुरआन में अरब के उन लोगों का ज़िक्र भी है जिन्होंने अल्लाह के पैग़ाम को माना और उस पर अमल किया!

अरब के कुछ लोग ऐसे भी हैं जो .ख़ुदा को जानते हैं और आख़िरी दिन पर यकीन रखते हैं! वो .ख़ुदा के लिए .ख़र्च करते हैं और पैग़म्बर की पैरवी करते हैं!

इसमें कोई शक नहीं कि यह बात उन्हें .ख़ुदा के नज़दीक ले जाएगी और .ख़ुदा उन्हें अपनी रहमत में दाख़िल करेगा! बेशक वह

माफ़ करने वाला और बड़ा रहमान है! (9:99)

अरब के हकीकत पसंद लोगों की पहचान ये है कि वो सरकार-ए-दो-आलम के धर्म पर हैं, यानी उन्होंने ज़िंदगी जीने का वो रास्ता इख़्तियार किया जो सरकार-ए-दो-आलम ने बताया था!

और ये इस ग़ुलाम की उन लोगों से गुज़ारिश है कि वो ख़ुदा के हकीकत के पैग़ाम को लोगों को बताएं, जो मज़हब के ठेकेदारों ने बदल दिया!

आप सोच रहे होंगे, 'अच्छा जी, ये नई बात है, पता नहीं क्या-क्या बोल रहे हैं, लिख रखा है!' दरअसल, ये अल्फ़ाज़ आपका नहीं, बल्कि सरकार-ए-दोआलम ने मुनाफ़िकों को समझाने के लिए अपनी जान तक दांव पर लगा दी, मगर उनकी समझ कुछ नहीं आया! वो यही कहते रहे कि 'हमारे बाप-दादा जो करते आए थे, वही सही है!

ये ग़ुलाम आपको क़ुरआन की एक आयत का हवाला पहले दे चुका है जिसमें ख़ुदा ने कहा है कि ये अरब के गंवार ख़ुदा का रास्ता इख़्तियार नहीं करेंगे! और फिर ख़ुदा ने सरकार-ए-दोआलम की मिसाल देकर समझाया कि जो हकीकत जानना चाहते हैं, वो सरकार-ए-दोआलम के बताए रास्ते पर चलें!

आज की तारीख में वही अरब के लोग ये सोचते हैं कि उनका ताल्लुक सरकार-ए-दोआलम के गिरोह से है! सोच कर देखिए ज़रा, क्या वो सरकार-ए-दोआलम के बताए रास्ते पर चल रहे हैं? ज़ाहिर सी बात है, उन्हें इस आयत के मायने मालूम होने चाहिए, जो उन्हें हकीकत की तरफ लेकर आएगीः

"जाहदू फ़ी सबीली लिल्लाह
बिआम्वालेहिम वा आनफ़ुसिहीम!"

और जो ख़ुदा के रास्ते पर चलते हैं और उसके लिए ही सब कुछ करते हैं, उनका ये फ़र्ज़ बनता है कि वो अपने लोगों को ख़ुदा के क़ुरआन का पैग़ाम समझाएं! वो जो आज खयाली और ज़ाहिरी

बुतों की पूजा करते हैं, वो .ख़ुदा के असल धर्म से ग़ाफ़िल हैं!

अरब के लोगों को तो सरकार-ए-दोआलम की जो .ख़ुदा ने उन्हें मिसाल दी थी, उस पर अमल करना था, यानी उन्हें अपनी ज़िंदगी ऐसी जीनी थी जैसे सरकार-ए-दोआलम ने जी, .ख़ुदा के रास्ते पर चलकर! उन्हें तो बुतपरस्ती के ख़िलाफ़ होना था! अब आप कहेंगे, 'वो तो ख़िलाफ़ नहीं हैं!' मेरे भाई, ज़ाहिरी बुत के ख़िलाफ़ होकर एक .ख़याली बुत बना लेना कहां की समझदारी है?

जो .ख़ुदा के पैग़ाम को जानते हैं और हकीकत का पैग़ाम लोगों को बताते हैं, उनके लिए क़ुरआन की एक आयत हैः तुम लोगों से न डरो और मुझसे डरते रहो, ताकि मैं अपनी रहमत तुम पर नाज़िल कर सकूं और तुम्हें हिदायत दे सकूं!'

अरबों को इस बात का एहसास होना चाहिए कि हमने अरब के लोगों के लिए एक पैग़म्बर भेजा जो उन्हें .ख़ुदा का पैग़ाम सुनाएगा, हिदायत का रास्ता दिखाएगा और उन्हें होश की दावत देगा, जो उन्होंने कभी नहीं सीखा! वो तो मुनाफ़िकों में से हैं, जिन्होंने .ख़ुदा को नहीं जाना और एक .ख़याली .ख़ुदा को मानकर उसे जानने का दावा करते हैं!

क़ुरआन अरबी ज़ुबान में है, इसका मतलब ये नहीं कि वो अरब के लोगों की विरासत है! क़ुरआन पर तो उन्हें ऐसा अमल करना था जैसा सरकार-ए-दोआलम ने उन्हें हुक्म दिया था! ग़ैर-अरब के लोग जो अरबी जानते हैं, वो इस बात का दावा नहीं करते कि वो सब कुछ जानते हैं! क्योंकि वो ये बात जान गए कि अरबी ज़ुबान को जानना ये नहीं है कि तुम .ख़ुदा को जान गए!

इन सब बातों का मफ़हूम ये है कि अगर .ख़ुदा सारी ज़बानें जानता है, तो तुम्हें किसी एक ज़ुबान को जानने की ज़रूरत नहीं है उसकी पहचान के लिए! .ख़ुदा ने कहा है कि आसमान, ज़मीन, पहाड़ और जितनी भी .ख़ुदा की मख़्लूक़ है, वो इंसान की ज़ुबान को

समझती है!.ज्यादातर हम हर इंसान को ये कहते सुनते हैं कि.ख़ुदा ने अपनी औलाद को पैदा किया, जन्नत बनाई, ज़मीन और पहाड़ बनाए!

क्या क़ुरआन की ये आयत कि.ख़ुदा की हर मख़्लूक़ इंसान की ज़ुबान को समझती है, इसका मतलब ये है कि.ख़ुदा ने अरबी ज़ुबान को कहा है? नहीं, ऐसा नहीं है, वो इंसान किसी भी ज़ुबान को जानने वाला हो सकता है!

वो जो कहते हैं.ख़ुदा का एक बेटा है, वो ये कहकर उसकी तौहीन करते हैं! ये ज़मीन और आसमान फट जाएंगे और पहाड़ ज़मीन के दोष हो जाएंगे उनका ये दावा सुनकर जो शिर्क है, बेशक .ख़ुदा बड़ा रहम वाला है! (19:90-91)

मेरे भाई, सारी बात का लब्बो-लुबाब ये है कि अरब मज़हब का इस बात पर ज़ोर देना कि.ख़ुदा की ख़िदमत और उसको पहचानने की कोशिश सिर्फ अरबी ज़ुबान के ज़रिए की जा सकती है, दरअसल ये बात तो साफ़ तौर पर उनकी बदनीयत ज़ाहिर करती है! ऐसे सभी दावे जो वो करते हैं, वो बेबुनियाद तो हैं ही, बल्कि क़ुरआन के बिल्कुल ख़िलाफ़ हैं!

ख़ुदा की मलकियत का दावा

क़ुरआन में तो .ख़ुदा का पैग़ाम बिलकुल साफ़ तौर पर लिखा हुआ है! ये सब उलझन में डालने वाली बातें तो इंसान ने पैदा की हैं! जैसे ये ग़ुलाम आपको बता चुका है कि जब इंसान सरकार-ए-दौलम पर नाज़िल हुए पैग़ाम के अल्फ़ाज़ों को अपनी हालत और अपने इख़्तियार के एतबार से बदलता है, तो उसके हक़ीक़त मायने .ख़त्म हो जाते हैं! मज़हबी ठेकेदारों ने अरब के मज़हब को बढ़ावा दिया न कि उस इस्लाम के पैग़ाम को जो सरकार-ए-दौलम पर नाज़िल हुआ! इन सब बातों का एक कारण ये भी है कि मुहब्बत बनाने

वालों ने ये इसलिए किया कि वो क़ुरआन को अपनी मलकियत साबित कर सकें और ये ज़ाहिर कर सकें कि वो मज़हब के रखवाले और उसके जानकारों में से हैं! एक और बात वो ये है कि यहाँ तो शैतान भी अरबी में बात करता है!

आज जो लोग .ख़ुदा की पहचान हासिल करना चाहते हैं, उन्हें अरब मज़हब में उलझा दिया जाता है और वो उसी में उलझ कर रह जाते हैं! एक मज़हबी इंसान जिसकी अकल मज़हब ने कुंद कर दी हो, वो मज़हब के ही ज़रिए .ख़ुदा तक पहुँचने की कोशिश करता है! और तो और, वो यह बात मानने को तैयार ही नहीं होता कि उसकी अकल कुंद हो चुकी है!

यह ज़रूरी है उन सभी के लिए जो एक .ख़ुदा को जानना चाहते हैं कि वो .ख़ुदा के बताए जीवन जीने के रास्ते को अपनाएँ (दीन लिल्लाह)। जो जिन्हें .ख़ुदा की पहचान हासिल हो गई, जो आरीफ हैं, वो यह बात जानते हैं कि .ख़ुदा ने पूरी इंसानियत के लिए अपना पैग़ाम पूरी दुनिया में कई पैग़म्बरों पर नाज़िल किया है! कहीं ना कहीं हम इतने ग़ाफ़िल हो गए हैं कि हमें .ख़ुदा के उन दुश्मनों की भी पहचान नहीं हुई जिन्होंने हमें .ख़ुदा के रास्ते से भटका दिया!

जो अरब की भाषा का जानकार है और .ग़ौर-ओ-फिक्र करता है, वो उन मौलवी साहब से बहस कर सकता है जिन्होंने क़ुरआन की तशरीह की है, बनाए हुए अरब मज़हब के लिए! लेकिन जिसे किसी की न माननी हो, उससे बहस करना बेकार है और अपने ही ऊपर ज़ुल्म करने के बराबर है! क़ुरआन की ऐसी मनमानी तशरीह जिसका .ख़ुदा के पैग़ाम से कोई ताल्लुक नहीं! ये .ग़ुलाम आपको इस किताब में क़ुरआन के कुछ शब्द बताएंगे, कैसे उनके मायने दिए गए हैं!

सच्चे लोग, जो .ख़ुदा की पहचान हासिल करके कभी न .ख़त्म होने वाला सुकून चाहते थे, उन्हें भी अरबी मज़हब में न मालूम

कितने फिरकों में बाँट दिया गया! उनके अंदर सवाल पैदा होते हैं, लेकिन वो अपने आप को मुसलमान मानते हैं और इस वहम के साथ रहते हैं!

मज़हबी लोगों ने हमेशा आपको बेवकूफ़ बनाया है और आप हर साल अपना पैसा खर्च करके अरब जाते हो और एक इंसान के बनाए हुए काबे का तवाफ करके आते हो! गौर कीजिए कि ख़ुदा का काबा अरब में ही क्यों? क्या ख़ुदा सिर्फ़ अरब के लोगों के लिए ही है?

लोगों को बांटना

ग़ौर करने वाली बात है कि मज़हबी लोगों को यह नहीं पता कि ख़ुदा के रास्ते का फिरके के नाम पर बटवारा करना कितना ग़लत है, उन्हें इस बात का एहसास तक नहीं होता! यह कहना ग़लत है कि ये बदलाव इस्लाम को बेहतर करने के लिए किए गए हैं! क्या पैग़ाम को बुनियादी तौर से समझने के लिए उसकी बार-बार अपनी समझ से तशरीह करना सही है? हमें उसे दबाना नहीं चाहिए जो बिल्कुल हकीकत है और अमल में लाने के लिए है! क़ुरआन से हमें यह मालूम होता है कि जो ख़ुदा के बताए रास्ते पर नहीं चल रहे, वो पैगंबर की जमात में से नहीं हैं! ज़रा ईमानदारी से सोचिए, क्या आज का मुसलमान अपने आपको सरकार-ए-दोआलम का उम्मती कहने के काबिल है?

दरअसल, वो जिन्होंने दीन को बदलकर मज़हब बना दिया,
तुम उनके ज़िम्मेदार नहीं हो! (6:159)

क़ुरआन की आयत साफ़ तौर पर बता रही है कि सरकार-ए-दोआलम ने फिरके नहीं बनाए और न ही इस्लाम को शिया और सुन्नी में बांटा!

हमारी तमन्ना ख़ुदा के बताए रास्ते पर चलने की होनी चाहिए

क्योंकि हमें उसी की तरफ लौटकर जाना है! ये बात आम कर दी गई है कि जो न दिखने वाले ख़ुदा को मानेगा, उसे मौत के बाद कभी न खत्म होने वाली ज़िन्दगी मिलेगी! इसीलिए हमें मज़हबी बनाने के लिए दलील दी जाती है कि वो ज़िन्दगी ज्यादा अच्छी है! इंसान मौत से डरता है और इसलिए वो इस लालच के चक्कर में मज़हबी बन जाता है! क़ुरआन की एक .खास आयतः

> पढ़ो अपने ख़ुदा के नाम से, जिसने तुम्हें पैदा किया! उसने इंसान को पैदा किया, उससे जो चिपकता है! पढ़ो, तुम्हारा ख़ुदा बड़ी शान वाला है! उसने क़लम के जरिए सिखाया! उसने लोगों को वो सिखाया जो वो नहीं जानते थे! (96:1-5)

दरअसल इस्लाम आज के दौर में अच्छे काम और खिदमत के बजाय दमन का काम कर रहा है अपनी रस्मो-रिवाजों और तकलीद के जरिए! चाहे वो बिना ख़ुदा को जाने उसकी इबादत के नाम पर ख्याली ख़ुदा की पूजा करना हो या अरब जाकर वहां इंसान के बनाए हुए काबे का तवाफ करना! इस ग़ुलाम को हज का फायदा सिर्फ़ ये नजर आता है कि अरब की टूरिज़्म इंडस्ट्री को पैसा मिलता है! इस रस्म ने हर एक मुसलमान को बरबाद कर दिया और उसे ख़्याली ख़ुदा का ग़ुलाम बना कर रख दिया! अगर एक तरीके से कहा जाए तो मज़हब अरब का एक निर्यात (export) है! बहुत सारे ऐसे लोग हैं जो इस इंसान के बनाए हुए हज को फर्ज समझकर पूरा करने के लिए मेहनत से पैसा इकट्ठा करते हैं, कर्जा लेते हैं और फिर इस झूठे फर्ज को पूरा करते हैं! ये बात आपको हैरान कर देगी कि पूरी दुनिया में सबसे ज्यादा लोग मज़हबी सफर के लिए सऊदी अरब जाते हैं! इश्क के सिवा ख़ुदा की कोई चमकती हुई मिसाल नहीं है!

ऐसी रस्मों ने मुसलमानों और पूरी इंसानियत के बीच बटवारा पैदा कर दिया है! ये रस्में कई तरह से इंसानियत और मुसलमानों

के बीच मत भेद और पक्षपाती पैदा करती हैं! इन सब का सबसे खतरनाक असर ये हुआ कि इंसान ख़ुदा के रास्ते से भटक गया है! पूरी दुनिया में अरब मज़हब ने अपनी रस्मों को बढ़ावा देने के लिए मज़हब को गिरोह में बांटकर बुराई को पैदा किया! सबसे .ज्यादा ज़रूरी और अहम बात ये है कि अरब मज़हब को बढ़ावा देने के लिए उन्हें भी बात दी जिन्होंने अमन में थे! आज दूसरे मज़हब जो मुसलमानों के साथ थे, वो मुसलमानों को दुश्मन समझने लगे हैं? क्यों कट्टर मुसलमान से लोग बचते हैं! वो जो मासूम मुसलमान हैं और जो अमन में हैं, उन्हें ख़ुदा की तरफ लौटना चाहिए, उसके हक़ीकत के दीन पर चलकर और उसकी खिदमत करनी चाहिए! उन्हें उन ख्याली बुतपरस्तों की तरह नहीं होना चाहिए जिन्होंने दीन को बदलकर मज़हब बना दिया!

> तुम्हें उसी की तरफ लौटना है और अपना ऐहद पूरा करो जो तुमने उससे किया था! और तुम उन बुतपरस्तों में से हो जाना जो दीन को बदलकर मज़हब बना दिए! हर गिरोह .ख़ुश है उससे जो उसके पास है! (30-31-32)

मदरसे में पढ़ने वाले बच्चे कम उम्र में ही अपने उलेमा से अरब मज़हब सीख चुके होते हैं! उनके उलेमाओं ने उन्हें जो भी बताया, वो उसे बिना तसदीक के ही सच मानते हैं और पूरी ज़िंदगी उसे ही हकीकत समझते हैं! मुसलमानों की हर नई नस्ल अरब मज़हब की झूठी तालीम से बेखबर ही रहती है! अगर कोई उनके मज़हब पर सवाल करता है तो वो दलील देते हैं कि अरबी मज़हब क़ुरआन के मुताबिक है! हालांकि ऐसा बिलकुल नहीं है! एक और बात, अगर कोई उनके मज़हब को न माने या मज़हब त्याग दे, तो ये जाहिल कौम उसे पत्थर मारकर जान से मार देती है! ये सब उनका बुतपरस्त होने का सबूत है!

पत्थर की पूजा करने वाले

अरब के बुतपरस्त लोगों का मज़हब रिवायत पर क़ायम है! जो मक्का में इंसानों के बनाए चार दीवारी को काबा कहते हैं! मज़हब के ठेकेदारों ने वहाँ जाना और उस चार दीवारी की पूजा करने को फर्ज करार कर दिया! और तो और, पूरी दुनिया के मुसलमान, वो कहीं भी हों, इंसान के बनाए काबे की तरफ अपना रुख करके उसे रुकू और सजदा करते हैं!

मज़हबी ठेकेदारों का ये कहना है कि मक्का में ईंट और पत्थर से बनी चार दीवारी ख़ुदा का घर है! वो लोग उस चार दीवारी को बैतुल-लाह भी कहते हैं! आपको ये बात जानकर हैरानी होगी कि क़ुरआन में बैतुल-लाह या ख़ुदा के घर जैसे शब्द का कोई जिक्र ही नहीं है! अगर ये इतना ज़रूरी है तो क़ुरआन में इसकी दलील क्यों नहीं है? ये एक और अरब के लोगों की बनाई हुई रस्म है और इससे .ज्यादा कुछ नहीं है!

एक और नज़रिये से भी आप सोच कर देख सकते हैं, क्या ये कहना सही है कि जो ख़ुदा पूरी कायनात का मालिक है, उसे मक्का की छोटे से 627 स्क्वायर फीट की खाली चार दीवारी में रहने की ज़रूरत है? ये सब सिर्फ इसीलिए हुआ कि बैतुल-लाह शब्द अरबी ज़ुबान में है और आपको जो मायने इस शब्द के बताए गए, आपने उसे सही मान लिया और खुद थोड़ी सी मेहनत करके हकीकत जानने की कोशिश नहीं की! पूरी दुनिया के मुसलमान अपनी ज़ुबान से बैतुल-लाह शब्द को दोहराते रहते हैं और वो इस पर सवाल भी नहीं करते क्योंकि उनसे कहा गया होता है कि ये ख़ुदा की तरफ से है, उसकी ज़ुबान में है! अगर वो सवाल करेंगे तो काफ़िर हो जाएंगे!

इस बात का श्रेय अरब के लोगों को देना चाहिए जिन्होंने ऐसी ख़्याली बातों की इतनी हिफ़ाज़त की और उन्हें बढ़ावा दिया! और

जो ग़ैर-अरब के मुसलमान हैं, वो इसे ख़ुदा की ज़ुबान समझकर दोहराते रहते हैं! उसके नाम से वो किसी को भी पूजा करना शुरू कर देते हैं! वो पत्थर के बुत को रुकू और सजदा कर लेते हैं सिर्फ अल्लाह शब्द के लिए!

ऐसे मुसलमान भी हैं जो कहते हैं कि ख़ुदा ज़मीन और आसमान का मालिक है, तो उनके साथ ये कहना भी ग़लत नहीं है कि उसका घर भी है! हालांकि ये बेबुनियाद बात ये सोचने पर मजबूर करती है कि ख़ुदा जिसने पूरी कायनात को पैदा किया, उसे किसी खास घर की ज़रूरत है अपनी एहमियत ज़ाहिर करने के लिए! इस सब के बावजूद वो बेवकूफ मुसलमान दूसरों को उनकी मूलत पूजा की वजह से उन्हें बुतपरस्त कहते हैं! क्या वो बुतपरस्त नहीं, जो पत्थर से बने काबे को पूजते हैं?

इससे शैतान की दख़ल-अंदाजी का पता चलता है! क़ुरआन के हवाले से हमें मालूम होता है कि शैतान दिमाग को काबू करने में कितना माहिर है! क़ुरआन कह रहा है कि ख़ुदा ने शैतान को उनका साथी बना दिया जिसने उसके पैग़ाम से इंकार किया! और शैतान उन्हें ये सोचवाकर कुछ ऐसा करेगा कि वो हिदायत के रास्ते पर हैं!

> वो जो ख़ुदा के पैग़ाम से इंकार करते हैं, उन्हें हमने शैतान का साथी बना दिया! और फिर शैतान उन्हें हकीकत के रास्ते से दूर रखेगा और उन्हें सोचवाएगा कि वो हिदायत पर हैं! (43: 36-37)

मज़हब के ठेकेदारों को भाषा की वजह से क़ुरआन के असल मायने समझने में मदद मिली है! आपने क़ुरआन को सिर्फ रटने और दोहराने तक ही रखा है! आज तक पूरी दुनिया के मुसलमान क़ुरआन को बिना ग़ौर-ओ-फिक्र किए सिर्फ़ पढ़ते रहे हैं! जबकि हम खुद क़ुरआन में ग़ौर-ओ-फ़िक्र करके बेबुनियाद बातों की हकीकत जान सकते हैं! जैसे ये ग़ुलाम आपको पहले भी बता चुका है कि

ऐसा जुल्म हर मज़हब के साथ हुआ है, बस हम थोड़ा सा ग़ौर-ओ-फ़िक्र करके अपनी ग़लतफहमी को दूर कर सकते हैं! क्या आपके अंदर बिलकुल भी ग़ौर-ओ-फिक्र करने की हिम्मत नहीं होती?

पहाड़ी चट्टानों की पूजा करना

इंसानों के बनाए हुए काबे के पास लोगों ने अजीब सी रस्में बना रखी हैं! आपने आपको मुसलमान कहने वाले लोग उस पत्थर के आगे रुकू और सजदा करते हैं और उस पत्थर से बने काबे के साथ (7) चक्कर लगाते हैं! और उस पत्थर से बनी चार दीवारी में ख़ुदा के होने का ऐलान करते हैं! जब लोग वहां होते हैं तो जोर जोर से कहते हैं, "ऐ ख़ुदा, मैं यहाँ हूँ," और उस पत्थर की तरफ चलते रहते हैं! लोग वहां उस पत्थर के पास रोते हैं, उसे चूमते हैं! वो इस बात से इनकार नहीं करते कि वो ख़ुदा की पूजा कर रहे हैं, इस पत्थर के बुत के ज़रिये! और तो और, मजेदार बात ये है कि वो ये सब करके ये दावा करते हैं कि ये ख़ुदा का घर है!

मक्का में पत्थर से बनी चार दीवारी पूरे दिन, हर रोज़ 24 घंटे पूरी दुनिया के लोगों से घिरी रहती है! हज के दौरान पूरी दुनिया के करीब 20 लाख लोग इसकी पूजा करते हैं! मुसलमानों का ऐसा करना इस काबे को पूरी दुनिया का सबसे कामयाब बुत बनाता है! ये ग़ुलाम आपको आगे बताऐगा कि कैसे एक साज़िश के तहत इस्लाम को एक बुतपरस्त मज़हब बना दिया गया! और ये साज़िश उन्होंने जान-बूझकर ख़ुदा के पैग़ाम के मायनों को बदलकर की है!

साज़िशें

ये ग़ुलाम आपको अरबी ज़ुबान के 28 ऐसे शब्द बताऐगा जिनके मायने मज़हबी ठेकेदारों ने अरब मज़हब को फैलाने के लिए बदल दिए और उन शब्दों के असल मायनों कतो आपसे छुपा दियाः

अरबी शब्द	**अरब की साजिश**	**हक़ीक़ी मायने**
1- **इस्लाम**	प्रस्तुत करना (पेश करना)	शांति (अमन)
2- **मुसलमान**	जो पेश करता है	जो अमन में है
3- **असरा**	सफ़र	लुभाना
4- **सलाह**	5 वक्त की रस्मी पूजा (नमाज़)	वादा
5- **दीन**	मज़हब	हुक्म या ज़िंदगी का तरीका
6- **बयेता**	ख़ुदा का घर	एक निज़ाम
7- **बैयतीया**	मेरा घर (ख़ुदा का)	मेरा निज़ाम
8- **बैतुल हराम**	ख़ुदा का पाक घर	निज़ाम में पाबंदियाँ
9- **बैतुल मुहृरम**	ख़ुदा का पाक घर	निज़ाम में पाबंदियाँ (तुम्हारी हद)
10- **मकाम**	पैरों के निशान	हैसियत या दरजा
11- **मुसोल-लान**	पूजा करने की जगह	अपने आप को अल्लाह के हवाले करने वाला
12- **मुसोल-लीन**	वो लोग जो रस्मी इबादत करते हैं	वो लोग जिन्होंने अपने आप को अल्लाह के हवाले कर दिया
13- **थोर-इफिन**	घर का घेराव करना	लोगों की भीड़
14- **अक़ीफिन**	पत्थर के घर के लिए पीछे हटना	समर्पित
15- **सुजुद**	शारीरिक तौर पर सजदा करना	सहमति
16- **वरोका'-इस-सुजुद**	रुकू और सजदा	अजीज़े से सहमति
17- **मसाजिद**	मस्जिद	सहमति का फ़ैसला
18- **मसाजिद-अल्लाह**	ख़ुदा की मस्जिद	ख़ुदा की सहमति से फ़ैसला होना
19- **मसाजिदिल-हराम**	पाक मस्जिद	ख़ुदा की मंज़ूरी की सहमति का फ़ैसला
20- **मस्जिदिल-अक़सा**	दूर की मस्जिद	सहमति के फैसले के करीब

21-	**मसाजिदिल-लिल्लाह**	ख़ुदा से ताल्लुक रखने वाली मस्जिद	ख़ुदा के लिए सहमति का फ़ैसला
22-	**हरमुन**	हाजियो का लिबास	सीमित (एक हद)
23-	**काबा**	ख़ुदा का घर	तकना या नीचले पैर
24-	**हदिया**	जानवरों की क़ुर्बानी	रहनुमाई
25-	**क़ोला-इदा**	जानवरों की माला (हार)	शिकार के नियम
26-	**उमरो-आता**	ख़ुदा के घर जाना	कामयाब होना या ज़िंदगी देना
27-	**हज**	सलाना धार्मिक सफ़र	चुनौती या प्रवचन देना
28-	**ज़कात**	मज़हब के लिए अपनी कमाई का 2.5% पैसा देना	पाक करना या पाक रखना

शायद आपको इन शब्दों की सूची पर यक़ीन नहीं हो रहा होगा! कैसे इन शब्दों के मायने दुनिया में इस तरह बदल दिए गए कि लोगों को खबर भी नहीं हुई! हालांकि क़ुरआन में एक मामूली रिसर्च इस बात को साबित कर सकती है कि कैसे ऊपर लिखे हुए अरबी शब्दों के मायने बदल दिए गए हैं! यह सब मज़हबी ठेकेदारों ने अपने लालच और मुफ़ात के लिए किया है! ख़ुदा के दीन को बदलकर उसके पैगंबर पर ज़ुल्म किया है! जो कुछ भी तुम्हें बताया या समझाया गया, उसे छोड़कर क़ुरआन पर ईमानदारी से रिसर्च करके आप हकीकत जान सकते हैं! इसमें कोई शक नहीं कि क़ुरआन ख़ुदा का कलाम है!

हम अल्लाह से किए सभी वादे को भूल चुके हैं! क़ुरआन में एक .ख़ास वादे का ज़िक्र एक ही सूरा में चार बार किया गया है!

> दरअसल हमने क़ुरआन को याद करने के लिए आसान बना दिया है! क्या कोई इसे जानने की तमन्ना रखता है!
> (54:17, 22, 32, 40)

मज़हबी ठेकेदारों ने अपने झूठे दावे साबित करने के लिए क़ुरआन की चार आयतों का बहुत ग़लत इस्तेमाल किया है! क़ुरआन

में तो इन आयतों के मायने उन्होंने बदल दिए, लेकिन वो क़ुरआन के शब्दों को और जगह न बदल सके! जिससे पता चला कि मज़हबी ठेकेदारों ने कितनी बड़ी साजिश की है!

आप लोग जानते हैं कि क़ुरआन .खुदा का कलाम है और पूरी दुनिया के मुसलमानों ने इसे .खुदा का कलाम क़ुबूल किया है! यह ग़ुलाम आपसे गुज़ारिश करता है कि आप इस ग़ुलाम के साथ ग़ौर-ओ-फिक्र कीजिए और क़ुरआन के हवाले से समझने की कोशिश कीजिए कि कैसे हम मज़हबी ठेकेदारों की साजिश का शिकार हैं!

क़ुरआन के एक बुनियादी उसूल के ज़रिए हम आगे बढ़ते हैं:

> क्यों ये लोग क़ुरआन में ग़ौर-ओ-फिक्र नहीं करते! अगर यह कलाम .खुदा की तरफ से नहीं होता तो लोग इसमें बहुत इख़्तिलाफ़ पैदा करते! (4:82)

क़ुरआन सबसे बेहतरीन हदीस है और यही .खुदा का पैग़ाम है! लफ़्ज़ "हदीस" आपको क़ुरआन की इन आयतों में मिल जाएगा!

> .खुदा ने सबसे अच्छी हदीस और पैग़ाम भेजा है क़ुरआन में, जो हमेशा से एक ही है! (39:23)

> इसके बाद आप किस हदीस या पैग़ाम पर यक़ीन करेंगे! (77:50)

इस ग़ुलाम का मक़सद लफ़्ज़ों के मायने तलाशने का है, वो भी सिर्फ क़ुरआन के ही ज़रिए! कैसे एक आयत से दूसरी आयत में ही लफ्ज़ों के मायने बदल दिए गए हैं! अगर आप क़ुरआन के अलावा कहीं और से क़ुरआन को समझने की कोशिश करेंगे तो आप हक़ीक़त से महरूम रह जाएंगे! क़ुरआन में किसी को मज़हब का रहनुमा नहीं कहा गया है, जैसे हम बाकी मज़हबों में देखते हैं, इसलिए हम मज़हबी ठेकेदारों के किए हुए तर्जुमे से बच सकते हैं और खुद क़ुरआन में ग़ौर-ओ-फिक्र करके हक़ीक़त को जान सकते हैं!

उन्होंने अपने मज़हबी रहनुमाओं को ख़ुदा से.ज्यादा अहमियत दी! (9:31)

कोई भी इंसान क़ुरआन पर अपने इख़्तियार का दावा नहीं कर सकता!

अल्लाह बड़ा रहम वाला है, वही है जो क़ुरआन सिखाता है! वही है जिसने इंसानों को पैदा किया! (55:2-3)

अगर आपको क़ुरआन को समझना है तो उसका ज़रिया सिर्फ उसे नाज़िल करने वाला ख़ुदा ही है!

वह्य को जल्दबाज़ी में न पड़ो! हमने ही उन्हें क़ुरआन में एक साथ रखा है! एक बार जब हम पढ़ें तो तुम इसे दोहराना और हम ही तुम्हें क़ुरआन समझाएंगे! (75:16-18)

किसी भी इंसान की तालीम से.ज्यादा बेहतर क़ुरआन ही तुम्हें क़ुरआन को समझने में मदद कर सकता है!

वो तुम्हारे पास कभी किसी मिसाल के साथ नहीं आते सिवाए इसके कि हम तुम्हें हक़ बताएंगे और सबसे सही तशरीह हमारी है! (25:33)

ये रिसर्च क़ुरआन पर है इसलिए जो लोग इस ग़ुलाम से सहमत नहीं हैं, वो सिर्फ क़ुरआन से ही दलील दें!

क़ुरआन से कुछ भी छुपा हुआ नहीं है!

क़ुरआन अरबी ज़ुबान में है जिसका पैग़ाम बिलकुल साफ है और वो ही कामयाबी पाने वाले हैं! (39-28)

.ज्यादातर मुसलमान इस ग़ुलाम की बातों से घबराएंगे क्योंकि वो ये सोचते हैं कि जो इस्लाम वो मानते हैं वही सही रास्ता है! दरअसल, उन्हें इस बात पर यकीन इसलिए है क्योंकि उनके बाप-दादा भी यही इस्लाम मानते आए हैं, हालाँकि वो ये नहीं जानते कि ये अरब मज़हब के ठेकेदारों का बनाया हुआ मज़हब है! ये किताब

आपसे क़ुरआन में .गौर-ओ-फिक्र करने का तकीज़ा करती है! ये .गुलाम मुसलमानों से गुज़ारिश करता है कि वो देखें कैसे उनकी आँखों के सामने उनके दिमाग को कुंद किया जा रहा है!

आप जिस ज़ाहिरी इस्लाम को मानते आए हैं, ये किताब उसे बिलकुल अलग है! लेकिन ये किताब क़ुरआन के हवाले से लिखी गई है, जिसे आप इनकार नहीं कर सकते! इस .गुलाम की उन लोगों के लिए .ख़्वाहिश है कि वो लोग उस गिरोह का हिस्सा न बन जाएं जिसका ज़िक्र क़ुरआन में किया गया है!

> यक़ीनन वो लोग जो यकीन नहीं करते, उन पर तुम्हारे आगाह करने से कोई फर्क नहीं पड़ेगा, वो यकीन नहीं करने वाले! ख़ुदा ने उनके दिलों पर मोहर लगा दी है और उनकी आँखों और कानों पर पर्दा डाल दिया है! और उन लोगों के लिए ये सबसे ज्यादा तकलीफ़ देने वाली बात है!
>
> (2-6-7)

इस .गुलाम की इस किताब से और क़ुरआन की रिसर्च से मज़हबी ठेकेदारों को बहुत .खतरा है! शायद उनको ये नबील-ए-बर्दाश्त हो जो खयाली और ज़ाहिरी बुतों की पूजा को इबादत का नाम देकर बढ़ावा देते हैं! ये वही लोग हैं जो कट्टर मज़हब को मानते हैं और ख़ुदा के नाम से आतंकवाद को बढ़ावा देने का काम करते हैं! ये .गुलाम चाहता हैं कि वो इस .गुलाम को ग़लत साबित करें लेकिन सिर्फ क़ुरआन की दलीलों से! सिर्फ अल्लाह के कलाम से मौलवी साहब के तर्जुमा से नहीं! अच्छा, एक बात बताऊं आपको, वो सिर्फ यही कहेंगे कि इस .गुलाम ने किताब में क़ुरआन के मायने बदले हैं! वो हमेशा से ही अपने खिलाफ उठी आवाज़ों को दबाते आए हैं! जाहिल मौलवी साहब ये सोचते रहे हैं कि वो सभी को बेवकूफ़ बना सकते हैं! हालांकि वो ये नहीं जानते कि क़ुरआन अल्लाह की किताब है और .गौर-ओ-फिक्र करने वालों के लिए हिदायत का पैग़ाम है!

क़ुरआन उन्हें ग़ौर-ओ-फिक्र की दावत दे रहा है! ".ख़ुदा ने जान-बूझकर उनकी रहनुमाई करना बंद कर दिया जो ग़ौर-ओ-फिक्र नहीं करते।" (10-100)। वो जो मज़हब के माहिर बनते हैं, वो किसी भी तरह से एक आम मुसलमान से बेहतर नहीं हैं! वो मज़हबी ठेकेदार जो तुम्हारी रहनुमाई का दावा करते हैं, वो खुद .ख़ुदा की रहनुमाई से महरूम हैं! .ख़ुदा ने साफ़ तौर पर कहा कि वो बिना किसी नाइंसाफी के उन्हीं को हिदायत देता है जिसे वो चाहता है!

.ख़ुदा किसी भी इंसान को हिदायत उसके इल्म या उसकी भाषा की वजह से नहीं देता, बल्कि वो तो इंसान की नीयत और उसके ग़ौर-ओ-फिक्र करने की वजह से उसे हिदायत देता है! हालाँकि वो लोग जो अपने आपको मज़हब का ठेकेदार कहते हैं, वो लोगों को झूठे करिश्मे और क़िस्से कहानियाँ ही बताते हैं! वो मासूम लोगों को धोका देते हैं और उनका इस्तेमाल करते हैं, वो ये सोचते हैं कि लोगों को उनकी रहनुमाई की ज़रूरत है! अगर आप क़ुरआन को सुनेंगे तो वो बार-बार ग़ौर-ओ-फिक्र करने का तकाज़ा करता है! मेरे भाई, ऐसी लोगों की मिसाल मत बनाओ जिनका ज़िक्र .ख़ुदा ने क़ुरआन में किया है!

उनमें से कुछ आपकी बात सुनते हैं लेकिन जब वो चले जाते हैं तो जानकारों से पूछते हैं कि "उन्होंने क्या कहा?" इसी तरह से .ख़ुदा ने उनके दिलों पर मोहर लगा दी है! और वो अपनी ही समझ पर क़ायम हैं! (47:16)

ऊपर दी हुई क़ुरआन की आयत को दोबारा पढ़िए! मेरे भाई, सोचने के लिए आपको पैसे थोड़े खर्च करने हैं! ये ग़ुलाम गुज़ारिश करता है कि इस किताब को खुले दिमाग से पढ़ें और ध्यान से सोचें! इस दुनिया में आप अकेले नहीं हैं कि जिनके मज़हबी ठेकेदारों ने क़ौम को दिमागी ग़ुलाम बना दिया हो या उनके दिमाग को कुंद कर दिया हो! ये सभी के साथ हुआ है, अंधे होकर मज़हब को मानते

चले आए हैं, चाहे वो ईसाई हो, यहूदी हो, ॠहदू हो, बौद्ध हो, सिख हो, पारसी हो, या किसी भी मज़हब को मानने वाले हों! सभी मज़हब के ग़ुलाम बन चुके हैं!

शुक्रिया

•••

Scan me!

Sufi Kashan Gyasi
9911590331

Sufi Shamim Gyasi
9716084184

Sufi Sameer Hussain Gyasi
97110 60125

MARKAZE TASAWWUF

KHANQAH SHARIF QADRIYA, SHUTTARIYA, CHISHTIYA, GHYASIYA

Zakir Nagar, New Delhi-110025, Mob.: 9911590331

youtube.com/@markazetasawwuf markazetasawwuf.com